सावन, मास , वर्ष-10, अंक 143, पृष्ठ- 8, मूल्य : 02 रुपये

प्रयागराज मंगलवार 13 अगस्त, 2024

TM

नगर संस्करण

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार

प्रयागराज से प्रकाशित एवं सम्पूर्ण भारत वर्ष मे प्रसारित

10 वर्ष विश्वास के

Adhunik Samachar

आई.टी.आई में सीधे प्रवेश

NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE

(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र के प्रवेश कार्यालय का हुआ उद्घाटन

नैनी। नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद के प्रवेश कार्यालय का हुआ उद्घाटन भारत सरकार द्वार मान्यता प्राप्त नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र प्रवेश कार्यालय का सिविल डिफेंस प्रयागराज के मंडल अधिकारी रौनक गुप्ता के द्वार किया गया प्रशिक्षण केंद्र के प्रवेश प्रभारी मोहम्मद कौसर ने बताया कि प्रयागराज में न्यूनतम शुल्क मुझे प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है। यहां इंडस्ट्रियल विजिट सेमिनार, ग्रुप डिस्कशन, आदि कराया जाता है जिसे प्रशिक्षणार्थियों का सर्वांगिन विकास होता है. केंद्र गुणवत्ता परिषद द्वारा स्टार ग्रेडिंग प्राप्त है. केंद्र के कंप्यूटर शिक्षक रोहित शुक्ल ने बताया कि सरकार द्वार छात्रवृत्ति एवं टैबलेट की सुविधा उपलब्ध है प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण के दौरन सरकार द्वार मांडे भी दिया जाता है प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण के दौरन सरकार द्वार मांडे भी दिया जाता है. मुख्य अतिथि ने नवीन प्रवेशार्थियों का स्वागत एवं उज्जवल भविष्य की कामना की अंतरराष्ट्रीय स्तर का है प्रयागराज नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण के द्र-रौनक गुप्ता.इस अवसर पर निरीक्षक विजय पांडे, रोहित शुक्ला, सचिन श्रीवास्तव, मोहम्मद कौसर, प्रदीप जायसवाल आदि लोग उपस्थित रहें।

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र.के छात्र रेलवे में चयनित

नैनी। नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद के चार छात्रों का सिकंदराबाद में रेलवे में चयनित होने पर संस्थान परिवार ने बधाई दी है। प्रयागराज करछना तहसील के नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद के चार छात्रों का रेलवे के धारा रेल प्रोजेक्ट सिकंदराबाद में चयन होने से विद्यालय प्रबंधतंत्र द्वारा छात्र का सम्मान एवं अभिनन्दन किया। इस अवसर पर संस्थान के प्रवेश प्रभारी मोहम्मद कौसर ने इन छात्रों का समारोहपूर्वक अभिनंदन एवं सम्मान करते हुये कहा कि यह विद्यालय के लिये गौरव की बात है।संस्थान के शिक्षक सदैव इस बात पर बल देते हैं कि छात्र अच्छा सीखें और अपने भविष्य को उज्ज्वल एवं सफल बनावें। उन्होंने भविष्य में और मेहनत व लगन से अध्यापन व अध्ययन करने हेतु शिक्षकों और छात्रों का आह्वान किया। इस अवसर पर केक काटकर केंद्र का स्थापना दिवस भी मनाया गया।

Admission Open 2024-25

श्री सत्यदेव दुबे (प्रधानाचार्य)
राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, भदोही

श्री सुजीत श्रीवास्तव (प्रधानाचार्य)
राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, नैनी, प्रयागराज

इं. अर्चना सरोज (ट्रेनिंग एवं पलेसमेन्ट, अधिकारी
राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, खागा, फतेहपुर

- ★ C.O.P.A.
- ★ Fitter
- ★ Computer Teacher Training
- ★ Electrician
- ★ Fire Safety & Industrial Security
- ★ Repair of Refrigerator & A.C.
- ★ Welding Technology
- ★ Certificate in YOGA
- ★ Security Service
- ★ Computer Hardware& Maintenance

Naini ITC Honored by U.P. State Industrial Association

JEEVAN EXPRESS NEWS

PRAYAGRAJ: A seminar was organized by Uttar Pradesh State Industrial Association on Friday. In which Naini Industrial Training Center was honored with a citation by the association's president Arvind Rai for providing high quality skilled workers. Mohammad Kausar received the honor from the Centre. On this occasion, all the entrepreneurs of Prayagraj including Arinnd Rai Sheetal Plastics, Anat Chandra Ventura Private Limited, BLKHN Engineering Works, S Shukla, Overseas Food Agro Private Limited, union officials and all the industrialists were present.

Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480

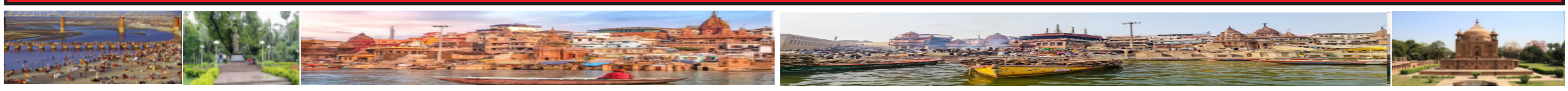

सर्किट हॉउस सभागार में गंगा एक्सप्रेस -वे परियोजना की समीक्षा बैठक आयोजित की गई

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। माननीय कैबिनेट मंत्री औद्योगिक विकास, निर्यात , एनआरआई एवं निवेश प्रोत्साहन श्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी जी अध्यक्षता में शनिवार को बैठक में माननीय मंत्री जी ने कहा किगंगा एक्सप्रेस -वे प्रोजेक्ट माननीय मुख्यमंत्री जी का ड्रीम प्रोजेक्ट है और महाकुंभ-2025 का आयोजन प्रयागराज में होने जा रहा है जिससे देश ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया की निगाहें यहां की व्यवस्था पर है। इसलिए माननीय मुख्यमंत्री जी के निर्देशानुसार दिसम्बर 2024 तक मुख्य कैरिजवे का निर्माण कार्य गुणवत्ता के साथ हर हाल में किया जाना है। बैठक में माननीय मंत्री जी ने गंगा एक्सप्रेस-वे परियोजना से जुड़े सभी वरिष्ठ अधिकारियो को निर्देशित करते हुए कहा कि वे इस परियोजना को दिसंबर 2024 तक की निर्धारित अवधि में ही पूर्ण करने के लिए अपनी पूरी क्षमता व सम्पूर्ण मशीनरी लगा दें। इस परियोजना के कार्य में कोई भी लापरवाही या उदासीनता क्षम्य नहीं है।बैठक में अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी यूपीडा के द्वारा प्रेजेंटेशन के माध्यम से माननीय मंत्री जी के द्वारा पूर्व में माह जुलाई तक परियोजना के 70 प्रतिशत कार्य पूर्ण करने के लक्ष्य के सापेक्ष परियोजना की ग्रुपवार अद्यतन

प्रगति के बारे में अवगत कराया। बैठक में अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी यूपीडा द्वारा बताया गया कि परियोजना को चार ग्रुप में बांटा गया है जिसमे ग्रुप-1 में जुलाई माह तक परियोजना के 70 प्रतिशत कार्य पूर्ण किये जाने के लक्ष्य के सापेक्ष 60.54 प्रतिशत प्रगति है, ग्रुप-2 में लक्ष्य के सापेक्ष 66.00 प्रतिशत, ग्रुप- 3 में लक्ष्य के सापेक्ष 49.20 व ग्रुप-4 में लक्ष्य के सापेक्ष 50.60 प्रतिशत की प्रगति है जिसपर माननीय मंत्री जी के द्वारा कड़ी नाराजगी व्यक्त की गयी और उन्होंने कहा कि गंगा एक्सप्रेस-वे परियोजना के मुख्य कैरेजवे का निर्माण निर्धारित समयसीमा में ही पूर्ण किया जाना है इसके लिए अवशेष दिनों में प्रत्येक दिन का लक्ष्य निर्धारित करते हुए नया प्लान बनाया जाये और उसके अनुसार कार्य किया जाये। माननीय मंत्री जी ने परियोजना के मुख्य कैरेजवे में मिट्टी, सबग्रेड, जीएसबी, डब्लूएमएम,डीबीएम, एवं बीसी के कार्यों की भौतिक प्रगति की समीक्षा करते हुआ कहा कि परियोजना के निर्माण में सबसे चैलेंजिंग कार्य मिट्टी का है जिसपर पूरा फोकस कर इसे पूर्ण किया जाये। बैठक में माननीय मंत्री जी ने परियोजना से जुड़े सभी वरिष्ठ अधिकारियो से परियोजना के मुख्य कैरेजवे को दिसम्बर 2024 की निर्धारित समयसीमा में पूर्ण करने के लिए उनके द्वारा क्या प्लानिंग व तैयारी की गई है, की जानकारी प्राप्त करते हुए मिट्टी के रेट को रिवाइज करने, दूर से मिट्टी की व्यवस्था करने के विकल्प खोजने और रिसोर्स को बढाने एवं फुल कैपेसिटी के साथ टारगेट व प्लान के अनुसार कार्य करने के लिए कहा है। इस अवसर पर वरिष्ठ मुख्य महाप्रबंधक यूपीडा, वरिष्ठ भू-अर्जन अधिकारी, महाप्रबंधक यूपीडा, मुख्य अभियंता यूपीडा, मुख्य कार्यकारी अधिकारी-अडानी व गंगा एक्सप्रेस-वे परियोजना से सम्बंधित अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

प्रयागराज में आज़ादी के अमृत महोत्सव में 78वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी जी के आह्वान

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। फूलपुर लोकसभा, विधानसभा 262 शहर उत्तर प्रयागराज में आज़ादी के अमृत महोत्सव में 78वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी जी के आह्वान एवं मुख्यमंत्री आदरणीय श्री योगी आदित्यनाथ जी के निर्देश पर अनामिका चौधरी प्रदेश मंत्री भारतीय जनता पार्टी उत्तर प्रदेश एवं प्रभारी चंदौली अपने पदाधिकारियों संग मृणाली मिश्रा, मंदाकिनी मिश्रा, नीलम शुक्ला, सुमन बाला, राजीव मिश्रा, अजय द्विवेदी अधिवक्ता, निखिल श्रीवास्तव, अरूण निषाद, सुधीर श्रीवास्तव, अशोक जायसवाल,सोनू अरोरा, आचार्य कौशल किशोर मिश्र, अनू निषाद, पंकज राय, कृष्ण कांत त्रिपाठी, प्रमोद दुबे आचार्य, दिलीप सेन, सचिन मिश्रा, मेज़र सुनील निषाद आदि ने 'हर घर तिरंगा' अभियान के अंतर्गत प्रयागराज के प्राचीन दशाश्वमेध घाट से जी.टी. रोड, मोरी, मीरागली, निरला मार्ग स्थित महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी की प्रतीमा तक तिरंगा यात्रा निकाल कर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन के महान क्रांतिकारियों एवं अमर बलिदानियों को नमन कर संपूर्ण मार्ग पर जन जन से संपर्क कर प्रत्येक घरों एवं व्यवसायिक प्रतिष्ठानों पर तिरंगा फहराने हेतु जागरूक किया।

साथियों संग यमुना नदी में नहाते समय नौवीं का छात्र तेज धार में बहा, स्टंट करते समय हुई घटना

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। जतिन को नदी में बहते देख लड़के चिल्लाए, कोई कुछ कर पाता तब तक जतिन नदी की धारा में समा गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने गोताखोरों और

स्थानीय नाविकों के सहयोग से नदी में जाल डालकर छात्र को खोजने का प्रयास कर रही है। प्रयागराज स्थित घूरपुर क्षेत्र के बीकर गांव में रविवार को सहपाठियों संग यमुना नदी में मौज-मस्ती कर रहा नौवीं का छात्र नदी की तेज धारा में बह गया। सूचना पर पहुंची पुलिस गोताखोरों और स्थानीय नाविकों के सहयोग से नदी में जाल डालकर लापता छात्र को खोजने का प्रयास करती रही है। घूरपुर के दलवाबारी गांव निवासी शिवकुमार केसरवानी के दो पुत्रों में बड़ा जतिन केसरवानी गांव के ही ग्राम ज्योति विद्यालय में नौवीं का छात्र है। रविवार को वह अपने एक अन्य सहपाठी रोहित के साथ बीकर गांव में अपने साथी आर एन निषाद से मिलने गया था। आरएन भी उन्ही की कक्षा में पढ़ता है। बात बात में तीनों बीकर में जिभिया पहाड़ी के पास यमुना सनन करने चले गए वहां गांव के कुछ हमजोली लड़के पहले से नदी में कूदकर स्टंट कर रहे थे। तीनों दोस्त भी नदी में नहाते हुए मस्ती करने लगे अचानक जतिन नदी की तेज धारा बहने लगा। जतिन को नदी में बहते देख लड़के चिल्लाए, कोई कुछ कर पाता तब तक जतिन नदी की धारा में समा गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने गोताखोरों और स्थानीय नाविकों के सहयोग से नदी में जाल डालकर छात्र को खोजने का प्रयास कर रही है। छात्र के परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है।

नकल से योग्यता और समान अवसर के सिद्धांत कमजोर होते हैं, कोर्ट की तल्ख टिप्पणी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। नकल से योग्यता और समान अवसर के सिद्धांत कमजोर होते हैं। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने यूपी कांस्टेबल भर्ती परीक्षा में अपनी जगह दूसरे को बैठाने के आरोप में जेल में बंद अमरजीत चौरसिया की जमानत खारिज कर दी।यह आदेश न्यायमूर्ति रोहित रंजन अग्रवाल की अदालत ने दिया है। वाराणसी के एसबी शिक्षा निकेतन इंटर कॉलेज, करौंदी सुंदरपुर में 17 फरवरी 2024 को यूपी कांस्टेबल भर्ती के लिए परीक्षा हुई थी। आवेदक अमरजीत चौरसिया के स्थान पर चंदन कुमार यादव परीक्षा दे रहा था।

कांस्टेबल भर्ती परीक्षा में अपनी जगह दूसरे को बैठाने वाले की जमानत खारिज कर दी। कोर्ट ने तल्ख टिप्पणी कर कहा कि नकल करने वालों से सख्ती से निपटा जाना चाहिए। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि सरकारी नौकरियों की परीक्षाओं में नकल से योग्यता और समान अवसर के सिद्धांत कमजोर होते हैं। परीक्षा में नकल व गड़बड़ी करने वालों से सख्ती से निपटा जाना चाहिए। यह तल्ख टिप्पणी कर हाईकोर्ट ने वाराणसी में यूपी बायोमीट्रिक सत्यापन के दौरान चंदन को स्कूल वालों ने पकड़कर पुलिस को सौंप दिया था। इसी मामले में अमरजीत के खिलाफ भी धोखाधड़ी सहित विभिनन्धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया। आवेदक 20 मार्च 2024 से जेल में है। उसने जमानत के लिए हाईकोर्ट से गुहार लगाई। वकील ने दलील दी कि आवेदक को इस मामले में गलत फंसाया गया है। उसका चंदन कुमार से कोई सरोकार नहीं है। इसलिए जमानत दी जाती है तो वह इसका दुरुपयोग नहीं करेगा।

कूबी में धरने पर बैठे किसान की हार्ट अटैक से मौत

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। मामले की जानकारी के बाद ग्रामीणों में शोक की लहर दौड़ गई। बाद में ग्रामीण सुरेंद्र शर्मा के शव को लेकर धरना स्थल पर पहुंच गए। सूचना पर तहसीलदार व एसडीएम भी पहुंचे हैं। कूबी आंदोलन को लंबा समय हो चुका है। मध्य गंगा नहर के लिए अधिग्रहित हुई जमीन के चार गुना मुआवजे की मांग को लेकर रविवार को धरने पर बैठे किसान सुरेंद्र शर्मा (45) की हार्ट अटैक से मौत हो गई। धरने के दौरान उनकी तबीयत बिगड़ी थी। अस्पताल पहुंचने पर चिकित्सक ने मृत घोषित कर दिया। जिससे ग्रामीणों में शोक की लहर दौड़ गई। बाद में ग्रामीण सुरेंद्र शर्मा के शव को लेकर धरना स्थल पर पहुंच गए। सूचना पर तहसीलदार व एसडीएम भी पहुंचे। ग्रामीणों ने मृतक के परिजनों को आर्थिक सहायता दिलाने की मांग की। शाम

चार बजे तक किसान शव के साथ ही धरना स्थल पर डटे हुए हैं। वह एडीएम को मौके पर बुलाने और आर्थिक मदद की मांग पर अड़े हैं। बता दें कि साल 2011 में रामपुर घना, मोहनपुर एवं घंसूरपुर तथा साल 2012 में गांव कूबी में मध्य गंगा नहर के लिए किसानों की भूमि अधिग्रहण की गई थी। जिसके बाद किसानों को सर्किल रेट के तहत चार गुना मुआवजा दिया जाना था। सरकार किसानों को 2011 के रेट के अनुसार मुआवजा दे रही है, जबकि किसान सर्किल रेट के चार गुने मुआवजे की मांग पर डटे हुए हैं। इसी मांग को लेकर किसान फरवरी माह से लगातार धरना दे रहे हैं। किसानों का कहना है कि जब तक उनको उचित मुआवजा नहीं दिया जाएगा, तब तक वह जमीन की खोदाई नहीं होने देंगे। वहीं मध्य गंगा नहर में पानी छोड़े जाने के बाद किसानों की बेचैनी बढ़ गई है। इस आंदोलन में पुरुष ही नहीं बल्कि महिलाएं भी लगातार शामिल हो रही हैं। किसानों का कहना है कि प्रशासन 2011 के तहत मात्र 50 हजार रुपये ही मुआवजा देना चाहता है। जोकि, उनके साथ सरासर धोखा है। वहीं जनप्रतिनिधियों ने भी ग्रामीणों की मांगे मुख्यमंत्री तक पहुंचाई, लेकिन ग्रामीणों को कोई ठोस आश्वासन नहीं मिल सका है। बता दें कि रविवार को धरने का 529 वां दिन था।

देश/विदेश   भारत

संक्षिप्त समाचार

राज्यसभा में एनडीए को स्पष्ट बहुमत मिलने की उम्मीद

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। अगले महीने 12 सीटों के लिए होने वाले उपचुनाव के बाद भाजपा के नेतृत्व वाले राजग को राज्यसभा में स्पष्ट बहुमत हासिल होने की उम्मीद है। इससे भाजपा को वक्फ (संशोधन) विधेयक जैसे प्रमुख बिलों को मंजूरी दिलाने में मदद मिलेगी।

उच्च सदन की इस समय प्रभावी ताकत 229 है। इनमें भाजपा के 87 सांसद हैं और उसके सहयोगियों के साथ यह संख्या 105 है।छह मनोनीत सदस्य, जो आमतौर पर सरकार के साथ अपना वोट डालते हैं, राजग की ताकत को 111 तक ले जाते हैं। यह वर्तमान में बहुमत के लिए जरूरी 115 से चार कम है। इसी तरह उच्च सदन में कांग्रेस के 26 सदस्य हैं। 58 सांसद इसके सहयोगी दलों के हैं। इससे विपक्षी गठबंधन की संख्या 84 हो जाती हैनौ राज्यों की 12 राज्यसभा सीटों के लिए 3 सितंबर को उपचुनाव होगा। 12 सीटों के लिए होने वाले उपचुनाव के बाद भाजपा के नेतृत्व वाले राजग को राज्यसभा में स्पष्ट बहुमत हासिल होने की उम्मीद है। इससे भाजपा को वक्फ (संशोधन) विधेयक जैसे प्रमुख बिलों को मंजूरी दिलाने में मदद मिलेगी। राज्यसभा सीट के लिए होने वाले उपचुनाव के 3 सितंबर को ही नतीजे घोषित किए जाएंगे।प्रमुख तटस्थ पाटिर्यों में वाईएसआर कांग्रेस के पास 11 और बीजद के पास आठ सांसद हैं। नौ राज्यों में खाली पड़ी 12 राज्यसभा सीटों के लिए तीन सितंबर को चुनाव होंगे। चुनाव आयोग ने प्रत्येक सीट के लिए अलग-अलग चुनावों की घोषणा की है। भाजपा और उसके सहयोगियों को चुनाव में 11 सीटें मिलने की उम्मीद है, जिससे राजग 122 सीटों पर पहुंच जाएगा।उच्च सदन में जम्मू और कश्मीर की चार सीटें खाली हैं, क्योंकि केंद्र शासित प्रदेश को अभी तक अपनी विधानसभा नहीं मिली है। इससे 245 सदस्यीय राज्यसभा की प्रभावी ताकत 241 रह जाती है। जिन नौ राज्यों की 12 राज्यसभा सीटों के उपचुनाव का कार्यक्रम जारी किया गया है उनमें सात सीटें भाजपा, दो कांग्रेस और एक-एक राष्ट्रीय जनता दल (राजद), बीजद और बीआरएस के पास थीं। राजद और कांग्रेस दोनों ही विपक्षी गठजोड़ के प्रमुख घटक हैं।

दोहा से जूते में 8 सोने की चेन छिपा लाया यात्री, अधिकारियों ने कोच्चि एयरपोर्ट पर धर दबोचा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
कोच्चि। अधिकारियों ने सोमवार को कोच्चि एयरपोर्ट पर एक यात्री पकड़ा है। दुबई के रास्ते दोहा से कोच्चि पहुंचे यात्री को कोचीन अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के एग्जिट

को लगभग 500 ग्राम सोने के साथ पकड़ा है। दुबई के रास्ते दोहा से कोच्चि पहुंचे यात्री को कोचीन अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के एग्जिट गेट पर अधिकारियों ने रोका। जब यात्री की सघन तलाशी ली गई तो उसके पास 8 सोने की चेन बरामद की गई। अधिकारियों ने सोमवार को कोच्चि एयरपोर्ट पर एक यात्री को लगभग 500 ग्राम सोने के साथ गेट पर अधिकारियों ने रोका। जब यात्री की सघन तलाशी ली गई तो उसके पास 8 सोने की चेन बरामद की गई। यात्री ने सभी आठों सोने की चेन जूतों के तल के अंदर छिपाई हुई थी। यात्री ने सभी आठों सोने की चेन जूतों के तल के अंदर छिपाई हुई थी, जिनका कुल वजन 466.5 ग्राम है। बता दें कि अधिकारी अक्सर विदेशों से सोना ला रहे यात्रियों को पकड़ते हैं।

पीएम मोदी का किसानों को तोहफा, गेहूं, चावल समेत 61 फसलों की 109 उन्नत किस्में की जारी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। देश में कम जमीन में अधिक पैदावार लेने की पहल को आगे बढ़ाते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को 61 फसलों की 109 नई एवं उनन्त किस्में जारी की हैं। इनमें चावल की नौ, गनन एवं तिलहन की सात-सात एवं बागवानी फसलों की 40 किस्में शामिल हैं।सभी किस्में पोषणयुक्त हैं, जिन्हें जलवायु एवं क्षेत्र के अनुकूल विकसित किया गया है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) में इनपर लंबे समय से काम किया जा रहा था। कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने किसानों एवं वैज्ञानिकों से प्राकृतिक खेती की जरूरतों, लाभों एवं जैविक खाद्यानने की बढ़ती मांगों पर विमर्श किया।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश के किसानों को बड़ी सौगात देते हुए रविवार को 61 फसलों की 109 नई एवं उनन्त

किस्में जारी कीं। ये नई किस्में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की ओर से लंबे समय के रिसर्च के बाद विकसित की गई हैं जिन्हें मौसम और क्षेत्र के अनुकूल बनाया गया है। इनसे कम जमीन में भी अधिक पैदावार हो सकेगी।प्रधानमंत्री ने सुझाव दिया कि कृषि विज्ञान केंद्रों (केवीके) को प्रत्येक महीने विकसित की जा रही नई किस्मों के लाभ के बारे किसानों को बताया जाना चाहिए, ताकि खेती की लागत में कमी आ सके। सरकार का जोर विज्ञान को खेतों तक पहुंचाने पर है। प्रधानमंत्री ने राजधानी के आईसीएआर परिसर के खेतों में जाकर इन नई किस्मों को जारी किया।

बीएसएफ ने मेघालय में इंटरनेशनल बॉर्डर के पास 7 बांग्लादेशियों को पकड़ा, दो भारतीय मददगार हिरासत में

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
शिलांग (मेघालय)। बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स ने मेघालय पुलिस की मदद से 10 अगस्त को एक सुनियोजित अभियान चलाकर एक अभियान में दो तस्करों को पकड़ा था। बीएसएफ ने तस्करों से मवेशी और फेनीडिल की बोतलें जब्त की थीं। बीएसएफ ने कहा कि भारतीय मददगारों के साथ

एक पुलिस चौकी पर दो भारतीय मददगारों के साथ सात बांग्लादेशी नागरिकों को गिरफ्तार किया है। बीएसएफ ने रविवार को एक बयान में जानकारी देते हुए बताया कि बांग्लादेश में चल रही हिंसा और अशांति को देखते हुए बीएसएफ मेघालय ने भारत-बांग्लादेश सीमा पर सुरक्षा बढ़ा दी है।बीएसएफ ने कहा कि भारतीय मददगारों के साथ पकड़े गए सभी अवैध बांग्लादेशी प्रवासियों को आगे की जांच और कानूनी कार्रवाई के लिए राज्य पुलिस को सौंप दिया गया है। इससे पहले बीएसएफ ने अंतरराष्ट्रीय सीमा पर हाल ही में पकड़े गए सभी अवैध बांग्लादेशी प्रवासियों को आगे की जांच और कानूनी कार्रवाई के लिए राज्य पुलिस को सौंप दिया गया है। इससे पहले बीएसएफ ने अंतरराष्ट्रीय सीमा पर हाल ही में एक अभियान में दो तस्करों को पकड़ा था। बीएसएफ ने तस्करों से मवेशी और फेनीडिल की बोतलें जब्त की थीं। इसके साथ ही बीएसएफ ने भारत में प्रवेश करने की कोशिश कर रहे 11 बांग्लादेशी नागरिकों को भी पकड़ा है। इसमें बंगाल और त्रिपुरा बॉर्डर से दो-दो और मेघालय-बांग्लादेश बॉर्डर से सात।

मणिपुर के कांगपोकपी जिले में बम ब्लास्ट

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
इंफाल। मणिपुर के कांगपोकपी जिले में एक बम विस्फोट में एक पूर्व विधायक की पतनी की मौत हो गई। अधिकारियों ने इस बात की जानकारी दी है। उन्होंने बताया कि बम विस्फोट शनिवार शाम सैकुल के पूर्व विधायक यमथोंग हाओकिप के घर के निकट स्थित एक घर में किया गया। उनकी पतनी का नाम सपम चारुबाला बताया जा रहा है। बता दें कि सपम चारुबाला पूर्व विधायक की दूसरी पतनी थी। अधिकारियों ने इस घटना की जानकारी देते हुए आगे बताया कि हादसे में सपम चारुबाला विस्फोट में घायल हो गई और उन्हें सैकुल में एक स्वास्थ्य सुविधा में ले जाया गया, इसके बाद उनकी मौत हो गई। जब विस्फोट हुआ तो हाओकिप भी अपने घर में थे लेकिन इस घटना में उन्हें कोई चोट नहीं आई।

केंद्रीय मंत्री अन्नपूर्णा देवी ने 21 राज्यों के मंत्रियों के साथ की पहली बैठक

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। केंद्रीय महिला बाल विकास मंत्री अनन्पूर्णा देवी ने राज्यों के महिला एवं बाल विकास और सामाजिक कल्याण मंत्रियों के साथ बैठक कर जारी योजनाओं की प्रगति जानी। इस दौरान केंद्रीय महिला बाल विकास मंत्रालय की प्रमुख पहलों के लिए भविष्य की कार्यनीतियों की समीक्षा पर भी ध्यान केंद्रित किया गया।राज्यों के साथ वीडियो कान्फ्रेंसिंग के जरिए पहली राष्ट्रीय स्तर की बैठक की अध्यक्षता करते हुए केंद्रीय महिला बाल विकास मंत्री अनन्पूर्णा देवी ने कहा कि महिलाओं

और बच्चों की भलाई सुनिश्चित करने के लिए केंद्र और राज्यों के बीच सहयोग आवश्यक है। अनन्पूर्णा देवी ने कहा कि हमारा उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि हमारे प्रयासों का लाभ जमीनी स्तर तक पहुंचे जिसके लिए राज्यों के साथ मिलकर काम करना जरूरी है। उन्होंने केंद्र और राज्य सरकारों के बीच सहयोगात्मक प्रयासों के महत्व पर जोर देते हुए मिशन सक्षम आंगनवाड़ी और पोषण 2.0, मिशन वात्सल्य और मिशन शक्ति के तहत मंत्रालय के प्रमुख कार्यक्रमों और योजनाओं को विशेष रूप से रेखांकित किया।

देशभर के अस्पतालों में बंद रहेंगी ओपीडी सेवाएं

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज के निवासियों के साथ एकजुटता दिखाने के लिए फेडरेशन ऑफ रेजिडेंट डॉक्टर्स

एसोसिएशन ने सोमवार को देश भर में वैकल्पिक सेवाएं बंद करने की घोषणा की है। यह कार्रवाई 9 अगस्त को कॉलेज में एक पोस्ट ग्रेजुएट ट्रेनी डॉक्टर महिला के साथ दुष्कर्म और हत्या के बाद की गई है। आरजी कर डॉक्टर हत्या मामले में ईर्ध्ई ने सोमवार को देशभर में वैकल्पिक सेवाएं बंद करने की घोषणा की है। 9 अगस्त को कॉलेज में एक पोस्ट ग्रेजुएट ट्रेनी डॉक्टर महिला के साथ दुष्कर्म और हत्या के बाद ये फैसला लिया गया है। बता दें कि दिल्ली के राम मनोहर लोहिया अस्पताल के डॉक्टरों ने भी घटना की सीबीआई जांच की मांग की है दीन दयाल उपाध्याय अस्पताल, लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज और संबद्ध अस्पतालों ने भी वैकल्पिक सेवाओं को निलंबित करने का फैसला किया है। मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज और इसके संबद्ध अस्पताल 12 अगस्त से ओपीडी, वार्ड और वैकल्पिक ओटी सहित वैकल्पिक सेवाओं को अनिश्चित काल के लिए निलंबित कर देंगे। इस दुखद घटना के बाद से पश्चिम बंगाल में राजनीतिक तूफान आ गया है। 10 अगस्त को तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के राष्ट्रीय महासचिव और सांसद अभिषेक बनर्जी ने दुष्कर्म के मामलों की सुनवाई सात दिनों के भीतर पूरी करने के लिए अध्यादेश या विधेयक लाने का प्रस्ताव रखा। उन्होंने इस मुद्दे के राजनीतिकरण की आलोचना की और त्वरित न्याय की आवश्यकता पर जोर दिया शनिवार, 10 अगस्त को मध्य प्रदेश के भोपाल स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के डॉक्टरों के एक समूह ने पश्चिम बंगाल के कोलकाता स्थित आरजी कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में एक महिला की मौत के विरोध में शनिवार शाम को कैंडल मार्च निकाला। इसी तरह, दिल्ली के राम मनोहर लोहिया अस्पताल के डॉक्टरों ने भी घटना की सीबीआई जांच की मांग करते हुए विरोध प्रदर्शन किया। कोलकाता में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने भी शनिवार को न्याय के लिए विरोध रैली निकाली।

दिल्ली-एनसीआर में फिर होगी झमाझम बारिश, यूपी बिहार समेत 15 राज्यों में भी आईएमडी का अलर्ट

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में रविवार को जमकर बारिश हुई। दिल्ली-एनसीआर में रविवार दोपहर

भारी बारिश के कारण कई इलाकों में जलभराव हो गया और यातायात बाधित हो गया। इससे तापमान में भी गिरावट आई और मौसम सुहाना हो गया। मौसम विभाग ने आज भी दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र में भारी बारिश होने का अनुमान जताया है मौसम विभाग के अनुसार, दिल्ली के सहित अगले 24 घंटों के दौरान, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, हरियाणा, पूर्वी राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों, उप-हिमालयी पश्चिम बंगाल, पूर्वोत्तर भारत, केरल, तमिलनाडु और दक्षिण आंतरिक कर्नाटक में हल्की से मध्यम बारिश के साथ कुछ स्थानों पर भारी बारिश हो सकती है। राजधानी समेत एनसीआर में आज भी बारिश होने के आसार हैं। छ्ठ ने आज भी राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के लिए येलो अलर्ट जारी किया है। रविवार को भी दिल्ली-एनसीआर में जमकर बारिश हुई थी। बारिश होने से कई इलाकों में जलभराव की समस्या पैदा दो गई जिससे लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। दिल्ली के अलावा आज भी कई राज्यों में झमाझम बारिश हो सकती है। इन राज्यों के अलावा, गंगा के तटीय पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड, उड़ीसा, तटीय आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, विदर्भ, रायलसीमा, दक्षिण आंतरिक कर्नाटक, गोवा, तटीय कर्नाटक, तटीय महाराष्ट्र, पूर्वी गुजरात और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में हल्की से मध्यम बारिश की संभवाना है मौसम विभाग का अनुमान है कि सोमवार को भी दिल्ली के ज्यादातर इलाकों में हल्की से मध्यम वर्षा हो सकती है। इसके लिए येलो अलर्ट भी जारी किया गया है। दिन भर बादलों की आवाजाही बनी रह सकती है। अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 33 और 26 डिग्री रहने की संभावना है। हवा की गति 16 किलोमीटर प्रति घंटे तक की रह सकती है। उत्तर प्रदेश में मानसून ने मजबूत रफ्तार पकड़ ली है। राज्य के अधिकांश हिस्सों में लगातार बरसात हो रही है। रविवार को लखनऊ समेत प्रदेश के कई जिलों में बरसात हुई। सोमवार को भी बरसात होने की संभावना है।मौसम विभाग के अनुसार 12 अगस्त को सुबह नौ बजे तक देवरिया, गोरखपुर, कुशीनगर, गोंडा, बलरामपुर, लखीमपुर खीरी, सीतापुर, बाराबंकी, सहारनपुर, शामली, बागपत, मेरठ, गाजियाबाद, पीलीभीत, बदायूं आदि आसपास के जिलों में भारी बरसात हो सकती है। छ्ठ ने अनुमान जताया है कि 17 अगस्त तक प्रदेश के अधिकांश जिलों में गरज-चमक के साथ बौछारें पड़ेंगी। कहीं-कहीं भारी बरसात भी हो सकती है। हिमाचल प्रदेश के सभी जिलों में भारी वर्षा हो रही है। पिछले चौबीस घंटों से राज्य के अधिकांश हिस्सों में लगातार बारिश हो रही है। वहीं, मौसम विभाग ने 17 अगस्त तक राज्य के सभी भागों में भारी वर्षा होने का यलो अलर्ट जारी किया है। आज शिमला जिला के चौपाल में बादल फटा, गोदाम में रखीं सेब की 200 पेटियां व सेब के 800 से ज्यादा पौधे बह गए। राज्य आपातकालीन परिचालन केंद्र से प्राप्त जानकारी के अनुसार प्रदेश में कुल 137 सड़कों पर यातायात बाधित हुआ है। 24 ट्रांसफार्मर बाधित होने से बिजली की समस्या खड़ी हुई है। इसके अतिरिक्त 56 पेयजल योजनाएं बाधित रहने से लोगों को पेयजल संकट का सामना करना पड़ सकता है। जम्मू- कश्मीर के कठुआ जिले के पहाड़ी इलाकों में मूसलाधार बारिश हुई। लगातार कई घंटे बारिश होने से नदी के किनारे के गांवो में लोगों का जीना मुश्किल हो गया। वहीं बारिश और भूस्खलन से सड़कों पर मलबा गिरा जिससे आवाजाही बंद रही। वहीं ये बारिश किसानों के लिए वरदान बनकर आई। किसानों को उम्मीद है कि इस बार धान की उपज अधिक और गुणवत्ता भी बेहतर रहेगी।

उत्तर भारत में मौसम ने बढ़ाई मुश्किलें, 21 लोगों की गई जान; केदारघाटी में झील टूटने की आशंका

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। उत्तर भारत में तेज वर्षा और भूस्खलन के कारण दुश्वारियों का दौर जारी है। रविवार को तेज वर्षा के कारण अलग-अलग राज्यों में हुए हादसों के चलते 21 लोगों की मौत हो गई है। राजस्थान में सबसे ज्यादा 14 लोगों की मौत हुई है, जिनमें से सात की मौत बाणगंगा नदी में नहाने के दौरान डूबने से हुई। बिहार में वर्षा के कारण हुए हादसों में पांच लोगों की मौत हुई है। पहाड़ों में जहां भूस्खलन के चलते सड़कें बंद हैं, वहीं मैदानी क्षेत्रों में जलभराव और उफनाती नदियों के चलते दिक्कत बनी हुई है। जम्मू में प्रशासन ने मौसम को देखते हुए अमरनाथ यात्रा को स्थगित कर दिया है। मौसम विभाग के अनुसार, अगले कुछ दिन भी ऐसा ही मौसम बना रह सकता है। पहाड़ी राज्यों में इसे लेकर ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है राजस्थान में शनिवार से हो रही तेज वर्षा के कारण प्रदेश के कई जिलों में हालात बिगड़ने लगे हैं। वहीं, वर्षा के चलते हुए हादसों में रविवार को 14 लोगों की मौत हो गई, जिनमें भरतपुर में बाणगंगा नदी में नहाने के दौरान डूबे सात

युवक भी शामिल हैं। इनमें से तीन चचेरे भाई थे। बारिश से कई मार्ग अवरूद्ध हो गए। वाहनों का आवागमन पूरी तरह से बंद हो गया है प्रदेश के मुख्य सचिव सुधांश पंत ने जिला कलेक्टरों को राहत व बचाव कार्यों पर निगरानी रखने का निर्देश दिया है। बाढ़ के हालात को देखते हुए स्कूलों में सोमवार को अवकाश घोषित कर दिया गया। सवाई माधोपुर जिले में कई छोटी-बड़ी नदियां उफान पर है। 20 गांवों का जिला मुख्यालय से संपर्क कट गया है हिमाचल के शिमला में बादल फटने से सेब के 800 पौधे बह गए जबकि गोदाम में रखीं सेब की 200 पेटियां भी पानी अपने साथ बहाकर ले गया। इसके अलावा कांगड़ा जिले में रानीताल के पास निर्माणाधीन मटौर-शिमला फोरलेन का लगभग 100 मीटर हिस्सा धंस गया। फोरलेन का मलबा नीचे पठानकोट-जोगेंद्रनगर रेललाइन पर गिरने से रेल लाइन को भी नुकसान पहुंचा है मंडी के नौ मील में कीरतपुर-मनाली फोरलेन व सिरमौर में पांवटा साहिब-शिलाई-गुम्मा राष्ट्रीय राजमार्ग भूस्खलन के कारण बंद रहे। प्रदेश में 137 सड़कें बाधित हैं। बाथू में दो बच्चे बह गए, जिसमें एक बच्ची के शव को बरामद किया गया जबकि दूसरे की तलाश जारी है। उत्तराखंड में केदारनाथ पैदल मार्ग पर भीमबली के पास मार्ग के दूसरी तरफ भारी भूस्खलन होने से मंदाकिनी नदी पर झील बन गई है। इससे नदी का प्रवाह रुक गया है। झील के टूटने पर बाढ़ की आशंका को देखते हुए प्रशासन ने अलर्ट जारी करते हुए गौरीकुंड से लेकर रुद्रप्रयाग तक लोगों को सचेत कर दिया है। चमोली में शनिवार रात बादल फटने से दो आवासीय भवन और एक गोशाला क्षतिग्रस्त हो गई। टिहरी में अंथवाल गांव के ऊपर करीब 40 मीटर लंबी दरार पड़ गई है। इसे देखते हुए आठ परिवार घर छोड़कर सुरक्षित स्थानों पर चले गए हैं। प्रदेश में 209 संपर्क मार्ग बाधित हैं, जिससे दर्जनों गांव अलग-थलग पड़ गए है। चारधाम यात्रा मार्ग भी निरंतर अवरुद्ध हो रहे हैं। रविवार सुबह करीब 11 बजे बदरीनाथ हाईवे पर छिनका भूस्खलन क्षेत्र में चट्टान का एक बड़ा हिस्सा टूटकर सड़क पर आ गया। प्रदेश में अधिकांश नदियां खतरे के निशान के आसपास बह रही हैं।

हिंडनबर्ग की रिपोर्ट पर मचा सियासी घमासान, कांग्रेस टीएमसी समेत विपक्षी दलों ने की सेबी प्रमुख बुच को हटाने की मांग

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। सेबी प्रमुख माधबी बुच के अदाणी समूह के साथ हितों के टकराव संबंधी हिंडनबर्ग के ताजा दावों ने सियासत को एक बार फिर से गरम

कर दिया है। विपक्षी दलों ने बुच पर लगाए गए आरोपों को बेहद गंभीर करार देते हुए उन्हें तत्काल सेबी प्रमुख पद से हटाने और केंद्र सरकार से कार्रवाई की मांग की है।कांग्रेस ने इसे महाघोटाला करार देते हुए आरोप लगाया कि अदाणी समूह से अपनी अंदरूनी मिलीभगत छिपाने के लिए माधबी बुच ने सेबी को घोटाले के पूरे दायरे की जांच नहीं करने दी।अमेरिकी शॉर्ट-सेलर हिंडनबर्ग रिसर्च द्वारा सेबी की अध्यक्ष माधबी बुच के खिलाफ लगाए गए आरोपों के मद्देनजर कांग्रेस ने रविवार को मामले की संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) से जांच कराने की मांग की है। साथ ही सेबी प्रमुख माधबी बुच को हटाने की भी मांग की है। कांग्रेस ने इसे महाघोटाला करार दिया है। विपक्ष ने कहा कि घोटाले की जांच के लिए जेपीसी ही एकमात्र विकल्प रह गया है।तृणमूल कांग्रेस, माकपा, शिवसेना यूबीटी सरीखे आइएनडीआइए के सभी प्रमुख दलों ने हिंडनबर्ग के नए दावों के मद्देनजर अदाणी प्रकरण की संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) से जांच की मांग फिर से दोहराई है। कांग्रेस ने रविवार को कहा कि देश के शीर्षस्थ वित्तीय नियामक के अधिकारियों की अदाणी समूह की मिलीभगत से हुए 'घोटाले' की जांच के लिए जेपीसी ही एकमात्र विकल्प रह गया है।कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने एक्स पर पोस्ट किया, सेबी ने सुप्रीम कोर्ट के समक्ष मोदीजी के परम मित्र अदाणी को हिंडनबर्ग के जनवरी 2023 के रहस्योद्घाटन पर क्लीन चिट दी थी।

माफ कीजिए आपको अंदर नहीं आने दे सकता' बांग्लादेश से भारत आए नागरिकों से बोले बीएसएफ के जवान

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। बांग्लादेश में जारी राजनीतिक उथल-पुथल के बीच सबसे ज्यादा अल्पसंख्यक हिंदू सताए जा रहे हैं। हजारों की संख्या में लोगों ने भारत का रूख करना

शुरू कर दिया है। इसको देखते हुए, बीएसएफ ने सीमा पर अपनी चौकसी बढ़ा दी है। बांग्लादेश से लोग पैदल आकर भारत की सीमा में घुसने की कोशिश करते हुए नजर आ रहे हैं इसे लेकर शिवसेना (शिंदे गुट) के नेता मिलिंद देवड़ा ने इंटरनेट मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर एक वीडियो साझा किया है। इस वीडियो में बीएसएफ का एक अधिकारी भारत की सीमा पर एकत्र हुए कई सौ बांग्लादेशी शरणाथिर्यों को समझाते हुए अपनी शांति से लोगों का दिल जीत रहे हैं।बांग्लादेश में जारी हिंसा के बीच हजारों की संख्या में लोगों ने भारत का रूख करना शुरू कर दिया है। इसके बाद से बीएसएफ का एक अधिकारी भारत की सीमा पर एकत्र हुए कई सौ बांग्लादेशी शरणाथिर्यों को समझाते हुए अपनी शांति से लोगों का दिल जीत रहे हैं। उन्होंने कहा हम चाहकर भी आपको अंदर नहीं जाने दे सकते। वह लोगों को समझा रहे हैं कि वह उन्हें अवैध तरीके से अंदर नहीं आने दे सकते। बंगाल के कूच बिहार के एक सीमा क्षेत्र के इस वीडियो में बीएसएफ के अधिकारी को बंगाली में बोलते हुए सुना जा सकता है, ''हम सभी जानते हैं कि आप किन समस्याओं का सामना कर रहे हैं। आप यहां आए हैं, लेकिन समस्या को इस तरह से हल नहीं किया जा सकता है। हम चाहकर भी आपको अंदर नहीं जाने दे सकते।' अधिकारी की अंदर ना आने देने की बात पर सभी लोग चिल्ला कर विरोध करने लगते हैं इस पर अधिकारी आगे कहते हैं, ''कृपया मेरी बात सुनें, चिल्लाने से कुछ नहीं होगा। पूरी दुनिया आपकी समस्या जानती है। लेकिन अभी इस पर उच्च स्तर पर चर्चा होनी बाकी है।

मिर्ज़ापुर

12अगस्त को बीएसए कार्यालय पर धरना प्रदर्शन कर पर शिक्षक शिक्षामित्रों का ज्ञापन

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। आदर्श समायोजित शिक्षक शिक्षामित्र वेलफेयर एसोसिएशन के प्रांतीय अध्यक्ष

विश्वानाथ कुशवाहा के आह्वान पर प्रदेश के समस्त बीएसए कार्यालय उरमौरा(रॉबर्ट्सगंज) पर धरना प्रदर्शन कर अपराह्न 3बजे जिला बेसिक शिक्षा आधिकारी महोदय के माध्यम से प्रदेश के मुख्यमंत्री महोदय को ज्ञापन भेजा जाएगा। जिलाध्यक्ष वकील अहमद खान ने बताया कि शिक्षामित्रों का जायज़ मांगे पूरी करने के लिए विशाल धरना प्रदर्शन जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी के माध्यम से उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री को ज्ञापन भेजा जाएगा। अगर फिर भी मांगे पूरी नहीं होती तो 5 सितम्बर(शिक्षक दिवस) वेा दिन लखनऊ की धरती पर आर पार का बिगुल फूंक कर धरना प्रदर्शन किया जाएगा ।श्री ख़ान ने अपील किया कि जनपद सोनभद्र के समस्त शिक्षामित्र 12अगस्त को अपने हक़ और हुकूक के लिए ज्यादा से ज्यादा संख्या में जुटकर सीधे विद्यालय से 2.30 बजे ज्ञापन कार्यक्रम में सम्मिलित हो।

पर्यावरण संकल्प अभियान के अंतर्गत निकाली गई पंचमुखी महादेव पर्यावरण तीर्थ यात्रा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। रविवार को पर्यावरण संरक्षण के लिए पंचमुखी महादेव मंदिर के परिसर में पर्यावरण तीर्थ

यात्रा कर के हरिशंकरी के पौधे सहित कुल पांच पौधे रोपित कर अभियान का शुरुआत किया गया ! अभियान के संयोजक क्रांति सिंह व अभिषेक मिश्रा ने बताया गया कि जनपद के सभी प्रसिद्ध शिवालयों पर पर्यावरण तीर्थ अभियान के अंर्तगत हरिशंकरी के पौधे सहित पांच पौधे रोपित किये जाने का संकल्प लिया गया है ! हरिशंकरी का पौधा पीपल , बरगद व पाकड़ का संयुक्त संयोजित पौधा होता है ! इसका आध्यात्मिक व पौराणिक महत्व है ! यदि सभी लोग जिस भी देवालय पर दर्शन करने जाए और वहां एक पौधा भी रोपित कर उसे सुरक्षित कर ले जाये तो यही इस अभियान की सफलता होगी, वर्तमान समय मे मानव कल्याण के लिए पर्यावरण संरक्षण के लिए ये कदम बहुत ही अतिआवश्यक है ! इस यात्रा में गुरमा जेल के जेल अधीक्षक जगदम्बा दुबे , पुजारी लक्ष्मण दुबे , समाजसेवी अनुपम त्रिपाठी , कबि प्रभात सिंह चंदेल , राजाराम दुबे , वकील अहमद ,देवानंद पाठक, बृजेश श्रीवास्तव,सर्वेश दुबे, भीम , गेंदालाल, अखिलेश, अनुज सिंह,अवधेश विश्वकर्मा, राजेश द्विवेदी,नीलू सोनी, राकेश चौधरी, अभिषेक मिश्रा, क्रांति सिंह आदि प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

सोनभद्र

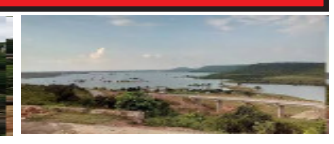

भाजपा युवा मोर्चा ने निकाला तिरंगा यात्रा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। रविवार को भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा सोनभद्र द्वारा जनपद के विधानसभा द्वारा दो विधानसभाओं मे बाइक रैली के माध्यम से तिरंगा यात्रा निकाला गया है। आने वाले 15 अगस्त को गरीब या अमीर हो छोटा तिरंगा लगाने के लिए तरह तरह के प्रोडक्ट बाजार मे दिखने लगते है इस कार्यक्रम के प्रति लोगो मे इतना उत्साह है कि तिरंगा

घोरावल व राबर्ट्सगंज में तिरंगा यात्रा निकाली गयी तिरंगा यात्रा मे राबर्ट्सगंज विधानसभा मे मुख्यअतिथि भाजपा जिलाध्यक्ष नन्दलाल जी घोरावल विधानसभा मे बतौर मुख्यअतिथि विधायक अनिल कुमार मौर्या मौजूद रहे। इस मौके पर भाजपा जिलाध्यक्ष नन्दलाल ने कहा कि हर घर तिरंगा - तिरंगा यात्रा विगत वषो से पार्टी के कार्यकर्ता सभी जनपदवासियों के साथ मिलकर हर घर पर तिरंगा लगाते है और सबको जागरुक करने के लिए आज भारतीय जनता युवा मोर्चा घर या बड़ा घर हो हर कोई तिरंगा लहराकर गर्व का अनुभव करता है तिरंगे के साथ सेल्फी लेकर सोशल मिडिया पर पोस्ट करने का भी सभी मे उत्साह दिखायी देता है। जब कालोनी या सोसाइटी के एक एक घर पर तिरंगा लहराता है तो देखते ही देखते दूसरे घरो पर तिरंगा दिखने लगता है। यानि हर घर तिरंगा अभियान तिरंगे के शान मे एक बेहतरीन त्यौहार के रुप मे बन चुका है। इसे लेकर अब तो तरह तरह के कार्यक्रम भी होने लगे है। 15 अगस्त आते आते घर मे दफ्तर मे कार मे अपने दोस्तो और पड़ोसियो को बांटते है तिरंगे को लेकर उल्लास ये उमंग हमे एक दूसरे से जोड़ती है।इस कार्यक्रम मे प्रमुख रुप से जिला महामंत्री कृष्णमुरारी गुप्ता, जिलाध्यक्ष युवा मोर्चा विशाल पाण्डेय, बृजेश श्रीवास्तव, सुरेन्द्र अग्रहरी, महामंत्री रजनीश रघुवंशी, विनय श्रीवास्तव, उत्कर्ष पाण्डेय, आशीष केशरी, विनित तिवारी, अतुल पाण्डेय, गुडिया त्रिपाठी, बलराम सोनी, कमलेश चौबे, हिरेश द्विवेदी, शिवम सिंह, रंजन पाण्डेय सहित सैकड़ो कार्यकर्ता मौजूद रहे।

डीडीएस पार्किंग में लायंस क्लब रेनूसागर किया सघन वृक्षारोपण

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। अनपर सोनभद्र थाना अनपरा परिक्षेत्र में स्थित डीडीएस

पार्किंग में आज लायंस क्लब रेनुसागर के तत्वावधान व सचिव शशि चंद्र राकेश यादव के कुशल मार्गदर्शन/ निर्देशन में आज औड़ी सिंगरौली मार्ग स्थित डी डी एस पार्किंग व अनपरा प्रेस क्लब के कार्यालय प्रांगण में वृहद् रूप से पौधारोपण किया गया, जिसमे फलदार पौधे लगाये गये जो, आगे चल कर वातावरण को शुद्ध वायु देने का काम करेंगे व श्री सुभाषचंद्र यादव (पूर्व निदेशक कोपरेटिव उ. प्र. सरकार) जी को सम्मानित किया गया तथा भूतपूर्व सैनिक श्री जंगबहादुर यादव जी जो 1962,1965,1971 के युद्ध में भारतीय सेना के गौरव में सम्मिलित रहे हैं को सम्मानित किया गया है एवम् आये हुवे सभी लोगो का ब्लड प्रेशर भी मॉनीटर किया गया । कार्यक्रम के अंत में सभी के लिए भोजन की व्यवस्था भी की गये थी। सभी सदस्य सपरिवार उपस्थित रहें । जिसमे मुख्य रूप से लायन क्लब के अध्यक्ष लायन ललित खुराना जी , सचिव लायन शशि चंद यादव जी, कोषाध्यक्ष लायन आशीष वर्मा जी, अश्विनी ठाकुर जी, पूर्व ज़ोन चेयरपर्सन समीर आनंद जी, , जय जयसवाल, ओ पी शर्मा, दीपक संखधर, दिवाकर चौरसिया, मनोज अवस्थी, आलम, शालिनी यादव, विधान बोस, गोविन्द श्रीवास्तव, कविता श्रीमाली , संजय श्रीमाली ,अरुण सिंह, रनजीत गुप्ता, आदि लोग के साथ अनपरा प्रेस क्लब के सभी पदाधिकारी एवं सदस्य गड़ उपस्थित रहें।

गोस्वामी तुलसीदास की जयंती पर सम्मान समारोह, विचार कवि गोष्ठी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। राष्ट्रीय संचेततना समिति सोनभद्र व विचार मंच सोनभद्र के संयुक्त तत्वावधान में रविवार गोस्वामी तुलसीदास जी की जयंती का भव्य आयोजन में सम्मान स्मृति सम्मान वरिष्ठ कवि दिवाकर मेघ विजयगढ़ी तथा सरस्वती श्री सम्मान कवयित्री अनुपमा वाणी को प्रदान किया गया जिसमें अंगवस्त्र लेखनी पुस्तिका धार्मिक साहित्य कृतिया नगद धनराशि प्रशस्ति पत्र

समारोह, विचार गोष्ठी,कवि गोष्ठी का आयोजन दोपहर में किया गया। आयोजन की अध्यक्षता करते हुए चिंतक व पूर्व चेयरमैन नगर पालिका सोनभद्र अजय शेखर वरिष्ठ साहित्यकार पारसनाथ मिश्रा वरिष्ठ कथा शिल्पी रामनाथ शिवेन्द्र ने माँ वाग्देवी व तुलसीदास के चित्र पर माल्यार्पण दीपदान पश्चात विधिवत कार्यक्रम का आगाज हुआ। जिसमें गोस्वामी तुलसीदास सम्मान अदलहाट मिर्जापुर के वरिष्ठ साहित्यकार ओम प्रकाश श्रीवास्तव प्रकाश मिर्जापुरी को अजय शेखर सम्मान डिबुलगंज सोनभद्र के सशक्त वरिष्ठ लेखक श्याम किशोर जायसवाल को तथा दयाराम पांडेय प्रतीक चिन्ह के साथ माल्यार्पण कर सम्मानित किया गया। संचालन भोला नाथ मिश्र आयोजक मंडल-जगदीश पंथी , नरेंद्र नीरव वंदना-दिवाकर मेघ इस अवसर पर पुर्व विधायक तीर्थराज, क्वीन्स कॉलेज बनारस टप्राचार्य रामानुज दीक्षित, शिवदास, कौशल्या कुमारी चौहान कवियित्री, धर्मेश चौहान, विनोद चौबे, सुरेंद्र कुमार पांडेय, प्रद्युमन तिवारी, डॉ लखन राम जंगली, सुनील चौकचक, सुधाकर देशप्रेम, दिलीप सिंह दीपक, दयानन्द दयालु, विकास वर्मा, प्रभात सिंह चंदेल, संजय विश्वकर्मा कवि प्रभात चौरसिया की पुस्तक ठफिर उग आनाठ का विमोचन किया गया।

सुद व जमीन के मामले में उलझी पुलिस खघाल रही सीसीटीवी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। सदर कोतवाली क्षेत्र के ब्रह्म नगर स्थित एक मकान में बीते शनिवार रात्रि हुई बिल्डिंग मटेरियल सप्लायर पति-पतने की

हत्या मामले में बीते 24 घंटे से पुलिस की साथ टीम में खघाल रही रिकॉर्ड दर्जनों लोगों से की गई पूछताछ दोस्त मित्र यार व मूल निवासी तक पहुंच रहे पुलिस के हाथ वही इस मामले में एडिशनल एसपी कालू सिंह ने बताया कि 7 टीम लगाई गई है पूछताछ व जांच जारी है सीसीटीवी की जांच कराई जा रही है सभी रोडो पर लगे मकान व व्यवसायों में लगे टीवी की जांच के लिए टीम गठित कर जांच अपडेट ली जा रही है हत्या के दिन कमरे से सूद ब्याज दर्ज हुई डायरी भी गायब है और जमीन के लेनदेन संबंधित मामले भी कुछ सामने आ रहे है जिसमें दोनों पहलुओं पर पुलिस जांच कर रही है पूरे मामले को पुलिस अधीक्षक डॉ यशवीर सिंह द्वारा मॉनिटरिंग की जा रही है जल्द ही मामले का खुलासा किया जाएगा आखिरकार किन कर्म से किन लोगों द्वारा यह घटना को अंजाम दिया गया है 7 टीम में जांच में लगाई गई है मूल निवास तक पहुची पुलिस टीम पुलिस टीम द्वारा मिर्जापुर के चुनार क्षेत्र में स्थित मूल निवास स्थल पर पहुंचकर संबंधित मामले में जांच पड़ताल कर रही है वहीं नगर के विभिनन मार्गों पर लगे सीसीटीवी फुटेज भी जच्चा पर ताला जा रहा है बच्चों द्वारा मिली जानकारी व आसपास से दर्जनों लोगों से की गई पूछताछ में मिले सच के आधार पर वह मोबाइल के कमांडर के माध्यम से पुलिस टीम तेज कर दी गई है जल्द ही मामले में कुछ न कुछ खुलासा किया जाएगा। वही नगर के व्यापारि राजेश गुप्ता ने बताया कि इस तरह सरेआम घर में घुसकर धार दार हथियार से बिल्डिंग मटेरियल व्यवसाय की पति पतने की हत्या यह कोई बड़ा मामला समझ में आता है जिसमें बड़े लोगों की भी संलिप्त हो सकती है पुलिस स्पष्ट पूर्वक इस मामले में जांच कर संबंधित दोषियों के खिलाफ कार्रवाई करें।

दो प्रार्थना स्थलों को किया गया ध्वस्त, अवैध कब्जा और मतांतरण की मिली थी शिकायत

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

मिर्जापुर। जिले में वन विभाग के कब्जा के इस मामले में वन तथा राजस्व कमिऱ्यों की तरफ से उधर, वन तथा राजस्व कमिऱ्यों द्वारा सौंपी गई रिपोर्ट के आधार

जंगल महाल की आरक्षित भूमि पर बने दो प्रार्थना स्थलों पर बुलडोजर चलाकर ध्वस्त किया गया। अतिक्रमण एवं अवैध कब्जे के साथ ही यहां मतांतरण की शिकायत मिली थी। मिर्जापुर जिले के जंगल महाल स्थित कुम्हिया तथा बेलखरा की वन भूमि पर बने दो प्रार्थना स्थलों को पुलिस अधीक्षक अभिनंदन तथा एसडीएम चुनार राजेश कुमार वर्मा की मौजूदगी में बुलडोजर से ध्वस्त किया गया। अतिक्रमण एवं अवैध आरोपियों के खिलाफ बीते नवंबर माह में तीन अलग- अलग मुकदमे दर्ज कराए गए थे। शासन को खुफिया जानकारी मिली थी कि जमालपुर ब्लॉक में अलग-अलग स्थानों पर अवैध रूप से सरकारी पहाड़ खाते, वन तथा राजस्व की जमीन कब्जा करके एक दशक से प्रार्थना स्थल का निर्माण कराकर मतांतरण कराया जा रहा है। इस मामले को गंभीरता से लेते हुए शासनस्तर से जांच कराई गई। पर एसडीएम ने जंगल महाल के कुम्हिया, बेलखरा में बने प्रार्थना स्थल का अभिलेखीय साक्ष्य संकलित किया। जिसमें अवैध रूप से कब्जा करके प्रार्थना स्थल का निर्माण कराकर मतांतरण का मामला सामने आया। इस मामले में आरोपियों के खिलाफ वन तथा राजस्व कमिऱ्यों की ओर से बीते नवंबर माह में तीन अलग-अलग मुकदमे दर्ज कराए गए थे।

कर्ज से बचने के लिए ब्लॉक को ऑर्डिनेटर ने ही रची लूट की साजिश

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

जमालपुर। भदावल गांव के पास एक फाइनेंस कंपनी के ब्लॉक कोआर्डिनेटर से हुई लूट के मामले का पुलिस ने 24 घंटे में पर्दाफाश करने का दावा किया है। लूट का आरोप लगाने वाले ब्लॉक कोऑर्डिनेटर को गिरफ्तार कर पुलिस ने उस पर कर्ज से बचने के लिए लूट की घटना की साजिश रचने का आरोप लगाया है। पुलिस ने आरोपी ब्लॉक कोऑर्डिनेटर के पास से 16.73 लाख रुपये भी बरामद किया है। जमालपुर थाने के औड़ी टियरा गांवकके मोड़ के पास स्थित एक फाइनेंस कंपनी में मिल्की निवासी प्रवीण पटेल कैश कलेक्शन का काम करता है। वह कलेक्शन के करीब 19 लाख रुपये लेकर अपने साथी दीपू खरवार के साथ नौ अगस्त की रात बाइक से घर लौट रहा था। आरोप था कि तीन बाइकों पर सवार सात लोगों ने उसे रोककर रुपयों से भरा बैग लूटकर ओड़ी गांव की ओर भाग गए। इसके बाद 19 लाख रुपये लूट लिए जाने की बात बताई गई। पुलिस अधीक्षक अभिनंदन ने बताया कि पुलिस की टीमों ने जहां-जहां से शिकायतकर्ता ने कैश कलेक्शन किया था, वहां से जुड़े सभी गवाहों से पूछताछ की। साथ ही जिस रूट से शिकायतकर्ता घटना स्थल तक पहुंचा था, उस रूट के सभी सीसी कैमरे फुटेज की जांच की गई। इससे स्पष्ट हुआ कि जिस स्थान पर शिकायतकर्ता द्वारा घटना घटित होने की बात बताई जा रही है, उस रूट पर शिकायतकर्ता के आगे या पीछे एक घंटे के अंदर कोई बाइक नहीं गई है। वह सुनसान रोड है। जहां रात में बहुत कम आवागमन होता है। उन्होंने बताया कि जिस रूट से लूट की घटना के बाद तीन बाइकों पर सवार लोगों के जाने की बात बताई गई थी, उस रूट पर लगे सीसी कैमरों को भी खंगाला गया। छानबीन में पता चला कि उस रूप पर एक भी बाइक एक घंट घंटे तक नहीं गुजरी। जांच में यह तथ्य भी सामने आया कि घटना से करीब आधे घंटे पहले शिकायतकर्ता व उसके साथी ने मोबाइल फोन का स्विच ऑफ कर लिया था। उन्होंने बताया कि छानबीन के दौरान पता चला कि शिकायतकर्ता प्रवीण पर काफी कर्ज था। तथ्यों के आधार पर उससे पूछताछ की गई तो टूट गया। उसने बताया कि वह करीब तीन साल से फाइनेंस कंपनी का कैश कलेक्शन कर बैंकों में जमा करता है। उसके ऊपर करीब सात लाख रुपये कर्ज है। पूछताछ के दौरान आरोपी ने यह भी बताया कि करीब ढाई लाख रुपये प्राइवेट फाइनेंस कंपनी के कर्मचारियों ने उसका रोक लिया था। वह भी वापस नहीं किया जा रहा है। उसको हर महीने करीब 30 हजार ब्याज भरना पड़ रहा है। वह तगादा करने वालों से परेशान था। इसके चलते उसने लूट की घटना की झूठी सूचना दी। उन्होंने बताया कि प्रवीण के पास से 16.73 लाख रुपये कैश बरामद हुए हैं। जिसे उसने छिपाकर रखा था।

बहू से संबंध के विवाद में दूधिया ने की थी सास की हत्या

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

मिर्जापुर। अतरौली गांव में पंखे से सिर कूंचकर की गई महिला की हत्या के मामले का पुलिस ने रविवार को पर्दाफाश करने का दावा किया। ओपी सिंह ने रविवार को पुलिस लाइन सभागार में पत्रकारों से बातचीत के दौरान दी। उन्होंने बताया कि 28 की जुलाई की रात अहरौरा थाना क्षेत्र के अतरौली गांव

पुलिस का कहना है कि सास के अलावा बहू से भी संबंध स्थापित करने पर हुए विवाद में दुधिया ने सावित्री की हत्या कर दी। इमिलिया चट्टी नहर के पास से आरोपी दुधिया को गिरफ्तार कर लिया गया है।यह जानकारी पुलिस अधीक्षक अभिनंदन और एएसपी ऑपरेशन में घर में अकेले रह रही महिला सावित्री देवी की फर्राटा पंखे से सिर कूंचकर हत्या कर दी गई थी। मुंबई से आए परिजनों ने सामूहिक दुष्कर्म कर हत्या का आरोप लगाया। पुलिस मामले की जांच में जुटी थी। उन्होंने बताया कि रविवार को सुबह पुलिस ने इस मामले में आरोपी दूधिया जयपाल यादव को इमिलिया चट्टी नहर के पास से गिरफ्तार किया है। पुलिस अभिनंदन के अनुसार आरोपी जयपाल से पूछताछ कि गई तो उसने बताया कि वह सावित्री देवी के घर से सात-आठ साल दूध लेकर उसे डेयरी में बेचने के लिए ले जाता था। इस दौरान दोनों के बीच संबंध हो गया और आपस में मिलने-जुलने लगे। इस बीच जयपाल की नियत सावित्री की बहू पर खराब हो गई। उन्होंने बताया कि बीते पांच जुलाई को सावित्री देवी की अनुपस्थिति में जयपाल ने बहू के साथ जबरदस्ती संबंध स्थापित किया। इस बात की शिकायत बहू ने अपनी सास सावित्री से की। इस पर सावित्री ने जयपाल को खरी-खोटी सुनाई। इसके बाद बीते 21 जुलाई को बहू को बेटे के पास मुंबई भेज दिया। उन्होंने बताया कि 28 जुलाई को आरोपी दूधिया जयपाल यादव सावित्री देवी के घर रात में मिलने गया था। इस दौरान दोनों के बीच बहू से संबंध को लेकर झगड़ा हो गया। इस दौरान जयपाल ने पास में रखे फर्राटा पंखे से प्रहार कर सावित्री की हत्या कर दी। हत्या के बाद पीछे के दरवाजे से बाहर चला गया।

रात भर हुई बारिश, कहीं सड़कें धंसी तो कई जगह भरा पानी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

मिर्जापुर। जिले में शनिवार को देर शाम शुरू हुई बारिश अगले दिन रविवार को सुबह तक जारी रही। जगह-जगह हुई मूसलाधार बारिश के कारण कई जगह जल भराव हो गया। कई जगह सड़कों पर पानी भर गया तो कुछ स्थानों पर सड़कें धंस गईं। इससे लोगों को आवागमन में दिक्कतों का सामना करना पड़ा। नटवा रेलवे पुल के नीचे पानी भर जाने से वहां घंटों छोटे-बड़े वाहन फंसे रहे।बारिश किसानों के लिए फायदेमंद है, लेकिन नगर क्षेत्र में सड़कों पर पानी भर जाने से लोगों की मुश्किलें बढ़ गईं। रविवार को सुबह भरुहना-वाराणसी मार्ग, रोडवेज परिसर में पानी भर जाने से यात्रियों को मुश्किलों का सामना करना पड़ा। इसी तरह रमईपट्टी, कचहरी, कलेक्ट्रेट परिसर, रमईपट्टी-कनौराघाट मार्ग, फतहां के अलावा सीडीओ आवास, मिर्जापुर-भटौली मार्ग पर जगह-जगह पानी भर गया। सिविल लाइन तिराहा से विसुंदरपुर तक जगह-जगह सड़कें दो से तीन फीट तक धंस गईं। प्रमुख मार्ग होने के कारण संबंधित विभाग सड़कों को दुरुस्त करने में जुटा रहा। नटवा रेलवे पुल के नीचे पानी भर जाने से छोटे-बड़े वाहन घंटों फंसे रहे। इसी तरह विंध्याचल में रेहड़ा चुंगी, पटेंगरा नाला व दूधनाथ चुंगी रेलवे पुल के नीचे पानी भरा रहा। इससे स्थानीय लोगों के अलावा श्रद्धालुओं को मां विंध्यवासिनी मंदिर पहुंचने के लिए लंबी दूरी तय करनी पड़ी। पानी भर जाने की सूचना पर नगर पालिका की ओर से पाइप लगवाकर पुल के नीचे से पानी निकलवाया गया। तब जाकर आवागमन शुरू हो पाया। इसी तरह ग्रामीण क्षेत्रों में भी कई जगह सड़कों पर पानी भर गया।

स्पोर्ट्स

बुमराह मेरे 300की0मी0 स्मैश शॉट को नहीं झेल पाएंगे' साइना नेहवाल ने आखिर क्यों कहा ऐसा, जिससे हर कोई हो गया हैरान

केशव महाराज की फिरकी के सामने डटे एलिक एथांजे दक्षिण अफ्रीका-वेस्टइंडीज के बीच रोमांचक टेस्ट रहा ड्रॉ

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिली। वेस्टइंडीज और दक्षिण अफ्रीका के बीच रविवार को दो मैचों की सीरीज का पहला टेस्ट ड्रॉ पर समाप्त हुआ। दक्षिण अफ्रीका ने अपनी दूसरी पारी 173/3 के स्कोर पर घोषित करके कैरेबियाई टीम को जीत के लिए 298 रन का लक्ष्य दिया। इसका पीछा करते हुए मेजबान टीम 201/5 का स्कोर बना सकी।वेस्टइंडीज के लिए एलिक एथांजे (92) और बारिश ने संकटमोचक की भूमिका निभाई क्योंकि मेजबान बल्लेबाज दक्षिण अफ्रीका के बाएं हाथ के स्पिनर केशव महाराज के सामने संघर्ष करते हुए नजर आ रहे थे। महाराज का दूसरी पारी में भी कहर जारी रहा, जहां उन्होंने 26.2 ओवर में दो मेडन सहित 88 रन देकर चार विकेट झटके।वेस्टइंडीज और दक्षिण अफ्रीका के बीच दो मैचों की सीरीज का पहला टेस्ट ड्रॉ पर समाप्त हुआ। वेस्टइंडीज को जीतने के लिए 298 रन का लक्ष्य मिला था जिसका पीछा करते हुए मेजबान टीम 5 विकेट के नुकसान पर 201 रन बना सकी। दक्षिण अफ्रीका के बाएं हाथ के स्पिनर केशव महाराज को प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया जिन्होंने पहले टेस्ट में कुल 8 विकेट झटके।दोनों देशों के बीच अब सीरीज का दूसरा व अंतिम टेस्ट मैच 15 अगस्त से प्रोविडेंस में खेला जाएगा।बता दें कि पांचवें व आखिरी दिन दक्षिण अफ्रीका ने अपनी दूसरी पारी 30/0 के स्कोर से आगे बढ़ाई। टोनी

डी जॉर्जी (45) और एडेन मार्करम (38) ने सुबह के सत्र में 48 रन और जोड़े। जोमेल वॉरिकन ने जॉर्जी को विकेटकीपर सिल्वा के हाथों कैच आउट कराकर मेहमान टीम को पहला झटका दिया।यहां से मार्करम को ट्रिस्टन स्टब्स (68) के साथ मिला। दोनों ने दूसरे विकेट के लिए 35 रन जोड़े। वॉरिकन ने फिर मार्करम को होल्डर के हाथों कैच आउट कराकर दक्षिण अफ्रीका को दूसरा झटका दिया। स्टब्स ने आक्रमक पारी खेलना जारी रखी, लेकिन वह आउट होने वाले आखिरी बल्लेबाज रहे। केमार रोच ने क्लीन बोल्ड करके स्टब्स की पारी का अंत किया। दाएं हाथ के बल्लेबाज ने 50 गेंदों में 6 चौके और दो छक्के की मदद से 68 रन बनाए।स्टब्स के आउट होते ही कप्तान टेंबा बावुमा ने पारी घोषित की। कप्तान बावुमा नाबाद 15 रन बनाकर लौटे। दक्षिण अफ्रीका का दूसरी पारी में स्कोर 29 ओवर में 173/3 रहा। मेजबान टीम को जीतने के लिए 298 रन का लक्ष्य मिला। वेस्टइंडीज की तरफ से जोमेल वॉरिकन ने दो विकेट झटके। केमार रोच को एक सफलता मिली।फिर वेस्टइंडीज की दूसरी पारी की शुरुआत बेहद खराब रही। केशव महाराज ने मेजबान कप्तान क्रैग ब्रेथवेट को खाता भी नहीं खोलने दिया और स्टब्स के हाथों कैच आउट करा दिया। स्कोर 18 पहुंचा था कि कगिसो रबाडा ने दूसरे ओपनर मिकेल लुईस (9) को स्टब्स के हाथों कैच आउट करा दिया।यहां से कैसी कार्थी (31) और एलिक एथांजे (92) ने तीसरे विकेट के लिए 46 रन जोड़े। फिर महाराज ने कार्थी को मुल्डर के हाथों कैच आउट कराकर इस साझेदारी को तोड़ दिया। एथांजे को कावेम हॉज (29) का साथ मिला और दोनों ने चौथे विकेट के लिए 63 रन की साझेदारी की। महाराज ने हॉज को विकेटकीपर वेरेनी के हाथों कैच आउट कराकर प्रोटियाज टीम को चौथी सफलता दिलाई। महाराज ने कैरेबियाई टीम को जोरदार झटका दिया, जब उन्होंने एलिक एथांजे को शतक पूरा करने से रोक दिया। रिकेलटन ने महाराज की गेंद पर कैच पकड़कर एथांजे की पारी का अंत किया। बाएं हाथ के बल्लेबाज ने 116 गेंदों में 9 चौके की मदद से 92 रन बनाए। फिर जेसन होल्डर (31) और जोशुआ डी सिल्वा (2) क्रीज पर जमे रहे और अंपायर्स ने मैच ड्रॉ की घोषणा की। वेस्टइंडीज की तरफ से दूसरी पारी में केशव महाराज ने सबसे ज्यादा चार विकेट झटके। कगिसो रबाडा को एक विकेट मिला।

पाकिस्तान के खिलाफ टेस्ट सीरीज के लिए बांग्लादेश टीम का एलान, स्टार तेज गेंदबाज और अनुभवी बल्लेबाज की हुई वापसी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिली। पाकिस्तान के खिलाफ 2 टेस्ट मैचों की सीरीज के लिए बांग्लादेश टीम का एलान हो गया है। 16 सदस्यीय टीम में स्टार तेज गेंदबाज तस्कीन अहमद और अनुभवी कीपर मुशफिकुर रहीम की वापसी हुई है। टेस्ट सीरीज की शुरुआत 21 अगस्त से होगी। पाकिस्तान जाएगी। नजमुल हुसैन शांतो (कप्तान), महमूदुल हसन जॉय, जाकिर हसन, शादमान इस्लाम, मोमिनुल हक, मुश्फिकुर रहीम, शाकिब अल हसन, लिट्टन कुमेर दास, मेहदी हसन मिराज, तैजुल इस्लाम, नईम हसन, नाहिद राणा, शोरिफुल इस्लाम, हसन महमूद, तस्कीन अहमद, सैयद

पहला मुकाबला रावलपिंडी में खेला जाएगा। सीरीज का दूसरा टेस्ट 30 अगस्त से कराची में शुरू होगा। टेस्ट सीरीज के लिए बांग्लादेश टीम 12 अगस्त को पाकिस्तान जाएगी पाकिस्तान के खिलाफ 2 टेस्ट मैचों की सीरीज के लिए बांग्लादेश टीम का एलान हो गया है। 16 सदस्यीय टीम में स्टार तेज गेंदबाज तस्कीन अहमद और अनुभवी कीपर मुशफिकुर रहीम की वापसी हुई है। पहला मुकाबला रावलपिंडी में खेला जाएगा। सीरीज का दूसरा टेस्ट 30 अगस्त से कराची में शुरू होगा। टेस्ट सीरीज के लिए बांग्लादेश टीम 12 अगस्त को खालिद अहमद।नेशनल सिलेक्शन पैनल के अध्यक्ष गाजी अशरफ हुसैन ने कहा, हमने पांच तेज गेंदबाजों का चयन किया है। तस्कीन अहमद केवल दूसरा टेस्ट खेलेंगे। उन्होंने जून के बाद से किसी टेस्ट में गेंदबाजी नहीं की है। सिलेक्शन पैनल ने शाकिब अल हसन और शोरफुल इस्लाम को टीम में जगह दी है, हालांकि ये दोनों काफी समय से टेस्ट क्रिकेट से दूर हैं। बता दें कि बांग्लादेश ए टीम इस समय पाकिस्तान में एक सीरीज खेल रही है। इसमें 2 चार दिवसीय मैच और 3 एक दिवसीय मैच शामिल हैं।

राहुल द्रविड़ ने गेंदबाजी में आजमाया हाथ,एनसीए के ग्राउंड स्टाफ के साथ क्रिकेट खेलकर जीता फैंस का दिल

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिली। राहुल द्रविड़ का बतौर भारतीय हेड कोच टी20 वर्ल्ड कप 2024 के बाद कार्यकाल समाप्त हुआ। उनका टीम इंडिया के कार्यकाल काफी यादगार रहा और इस दौरान विवाद भी न के बराबर रहे। राहुल द्रविड़ की कोचिंग में भारतीय टीम ने टी20 विश्व कप 2024 का खिताब अपने नाम किया वहीं, टीम इंडिया से अलग होने के बाद द्रविड़ लगातार सुखिय्रां बटोर रहे हैं। उनका एक वीडियो तेजी से सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, जिसमें वह गेंदबाजी में हाथ आजमाते हुए नजर आ रहे हैं। उनका ये अंदाज देख फैंस काफी खुश नजर आ रहे हैं। भारतीय टीम के पूर्व हेड कोच राहुल द्रविड़ का एक वीडियो तेजी से सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है जिसमें वह नेशनल क्रिकेट एकेडमी के ग्राउंड स्टाफ संग क्रिकेट खेल रहे हैं। भारतीय टीम के पूर्व कोच को गेंदबाजी करते देखा जा सकता है। इस वीडियो को देख फैंस काफी खुश नजर आ रहे हैं।दरअसल, सोशल मीडिया पर राहुल द्रविड़ का एक वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है, जिसमें वे नेशनल क्रिकेट एकेडमी के ग्राउंड स्टाफ के साथ क्रिकेट खेलते हुए दिखाई दे रहे हैं। इस वीडियो में राहुल द्रविड़ गेंदबाजी कर रहे हैं और उन्होंने

जीन्स और टी-शर्ट पहनी हुई है। वीडियो में खिलाड़ियों के साथ-साथ दर्शकों की भीड़ भी देखी जा सकती है। राहुल द्रविड़ के बाद गौतम गंभीर को भारतीय टीम का नया कोच बनाया। श्रीलंका दौरे के साथ गंभीर ने अपने कार्यकाल की शुरुआत की। अब टीम इंडिया के पूर्व हेड कोच राहुल द्रविड़ आईपीएल 2025 में राजस्थान रॉयल्स को कोचिंग देते हुए नजर आ सकते हैं। द्रविड़ श्रीलंकाई दिग्गज कुमार संगकारा की जगह ले सकते हैं, जिन्हें इंग्लैंड की व्हाइट बॉल टीम का कोच बनाया जा सकता है। बता दें कि द्रविड़ पहले भी राजस्थान रॉयल्स के मेंटर रह चुके हैं।

अभी नहीं थमा क्रिकेट का रोमांच, श्रीलंका से हार के बाद अब इन टीमों से होगी भारत की टक्कर

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिली। भारतीय क्रिकेट टीम हाल ही में श्रीलंका दौरे पर गई थी। इस दौरान दोनों टीमों के बीच 3 टी20 और फिर 3 वनडे मैचों की

सीरीज खेली गई थी। सूर्यकुमार यादव की कप्तानी वाली टी20 टीम ने सीरीज में क्लीन स्वीप किया था। हालांकि, रोहित शर्मा की कप्तानी वाली टीम को वनडे सीरीज में 0-2 से हार मिली थी। पहला वनडे टाई रहा था।भारतीय क्रिकेट टीम हाल ही में श्रीलंका दौरे पर गई थी। इस दौरान दोनों टीमों के बीच 3 टी20 और फिर 3 वनडे मैचों की सीरीज खेली गई थी। टी20 टीम ने सीरीज में क्लीन स्वीप किया था। हालांकि वनडे सीरीज में भारत को हार मिली थी। भारतीय टीम भले ही श्रीलंका से वनडे सीरीज हार गई हो पर क्रिकेट का रोमांच अभी थमा नहीं है।भारतीय टीम भले ही श्रीलंका से वनडे सीरीज हार गई हो, पर क्रिकेट का रोमांच अभी थमा नहीं है। जल्द ही बांग्लादेश टीम भारत का दौरा करेगी। इसके बाद न्यूजीलैंड टीम भारत आएगी। साल के आखिरी में भारतीय टीम ऑस्ट्रेलिया जाएगी। साथ ही अगले साल की शुरुआत में इंग्लैंड टीम भारत आएगी। ऐसे में आइए जानते हैं कि यह सीरीज कब-कब खेली जाएंगी और इनका शेड्यूल क्या है अगले महीने बांग्लादेश टीम भारत दौरे पर आएगी। इस दौरान दोनों टीमों के बीच 2 टेस्ट और 3 टी20 इंटरनेशनल मैच खेले जाएंगे। इस दौरे की शुरुआत 19 सितंबर से होगी और आखिरी मैच 12 अक्टूबर को खेला जाएगा। अक्टूबर में न्यूजीलैंड टीम भारत का दौरा करेगी। इस दौरान दोनों टीमों के बीच 3 टेस्ट मैचों की सीरीज खेली जाएगी। टेस्ट सीरीज की शुरुआत 16 अक्टूबर से होगी और यह 5 नवंबर तक चलेगी।इस दौरे पर दोनों टीमों के बीच 4 टी20 मुकाबले खेले जाएंगे। सीरीज का पहला टी20 8 नवंबर को और आखिरी 15 नवंबर को खेला जाएगा।

भारतीय स्टार क्रिकेटर मोहम्मद सिराज ने खरीदी ड्रीम कार लाखों नहीं करोड़ों में है कीमत

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिली। भारतीय टीम के तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज अपनी घातक गेंदबाजी के लिए मशहूर हैं। उनके आगे अच्छे-अच्छे बल्लेबाज चकमा खा जाते हैं। साउथ अफ्रीका के खिलाफ हाल ही में खेली गई वनडे सीरीज में मोहम्मद सिराज ने 3 विकेट अपने

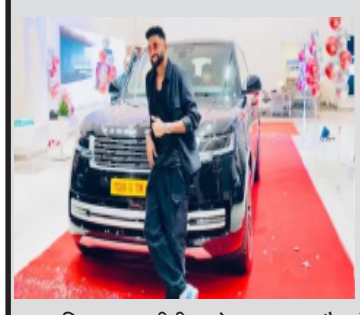

नाम किए इस सीरीज के खत्म होने के बाद सिराज अपने परिवार के साथ टाइम स्पैंड कर रहे हैं। इस बीच उन्होंने अपने एक सपने को पूरा कर लिया है। उन्होंने करोड़ों रुपए खर्च करके एक नई कार खरीदी है। सिराज ने सोशल मीडिया पर फोटो शेयर करने के साथ एक कैप्शन भी लिखा। भारतीय टीम के तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज को कार का काफी शौक है। हाल ही में उन्होंने अपने कार कलेक्शन में एक और कार को शामिल कर लिया है। सिराज ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक पोस्ट शेयर किया जिसमें उन्होंने जानकारी दी है कि उन्होंने लैंड रोवर रेंज रोवर कार को खरीद लिया है जो कि उनकी ड्रीम कार रही।दरअसल, मोहम्मद सिराज ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक पोस्ट शेयर किया है, जिसमें उन्होंने बताया कि उन्होंने नई कार खरीद ली हैं। सिराज के साथ तस्वीर में उनका पूरा परिवार नजर आ रहा है।सिराज ने ड्रीम कार के साथ कैप्शन में लिखा कि आपके सपनों की कोई सीमा नहीं है, क्योंकि वे आपको कड़ी मेहनत करने और ज्यादा प्रयास करने के लिए प्रेरित करते हैं। यह आपका प्रयास है जो निरंतरता के साथ किया गया है जो आपको आगे ले जाएगा। भगवान के आशीर्वाद और मुझे अपने परिवार के लिएॅ लैंड रोवर प्राइड मोटर्स से इस सपनों की कार खरीदने में सक्षम बनाने के लिए उनका आभारी हूं। अगर आप खुद पर विश्वास रखते हैं तो आप वह भी हासिल कर सकते हैं जो आप चाहते हैं।बता दें कि मोहम्मद सिराज ने जो कार खरीदी हैं वह लैंड रोवर रेंज रोवर ऑटोबायोग्राफी एलडब्लूबी की कीमत करीब 2.60 करोड़ रुपये हैं। ये टॉप मॉडल कार हैं।

विनेश फोगाट के समर्थन में उतरे सौरव गांगुली, बोले- वो सिल्वर मेडल की हकदार हैं

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिली। पेरिस ओलंपिक 2024 में 100 ग्राम वजन बढ़ने की वजह से महिला रेसलर विनेश फोगाट को डिसक्वालिफाई कर दिया गया था। इसके बाद विनेश फोगाट ने कुश्ती से संन्यास का एलान अगले दिन ही किया। हालांकि, विनेश ने सिल्वर मेडल के लिए से अपील की थी, जिसको लेकर फैसला मंगलवार यानी 13 अगस्त को आना संभव है। इस कड़ी में विनेश फोगाट को पूर्व भारतीय टीम के कप्तान सौरव गांगुली का साथ मिला है। गांगुली ने न्यूज एजेंसी पीटीआई से बातचीत करते हुए कहा है कि विनेश फोगाट सिल्वर मेडल की हकदार हैं।विनेश फोगाट की याचिका पर कोर्ट ऑफ आर्बिट्रेशन फॉर स्पोर्ट में 9 अगस्त को सुनवाई पूरी हो गई थी लेकिन इस मामले में फैसले के लिए अभी और इंतजार करना पड़ रहा है। अब इस मामले में फैसला 13 अगस्त को भारतीय समयानुसार रात 930 बजे तक होने की उम्मीद है जिसमें ये पता चलेगा कि विनेश फोगाट को सिल्वर मेडल मिलेगा या नहीं दरअसल, भारतीय महिला रेसलर विनेश

फोगाट को पेरिस ओलंपिक 2024 में कुश्ती के फाइनल मैच से पहले अयोग्य घोषित कर दिया गया था। उन्हें 50 किलोग्राम वर्ग के लिए फाइनल में भिड़ना था, लेकिन इस मैच से पहले वजन करने के दौरान उनका 100 वजन ज्यादा निकला, जिसकी वजह से उन्हें डिसक्वालिफाई किया गया। फाइनल मैच से ठीक पहली रात को विनेश का अचानक से 2.7खु वजन बढ़ गया और उन्होंने पूरी रात बिना सोए लगातार एक्सरजाइज की और यहां तक कि खून तक निकाला, लेकिन फिर भी वह फाइनल मैच खेलने से चूक गईं। विनेश को डिसक्वालिफाई किए जाने के बाद भारत में इस फैसले का काफी विरोध हुआ। इसके बाद विनेश फोगाट ने में सिल्वर पदक के लिए अपील दायर की। इस मामले में सुनवाई पूरी हो चुकी है और फैसले का इंतजार है। इस बीच सौरव गांगुली ने कहा कि मैं सटीक नियम नहीं जानता हूं, लेकिन मुझे यकीन है कि जब वह फाइनल में पहुंची थीं, तो उसने ठीक से क्वालिफाई किया होगा। इसलिए जब आप फाइनल में जाते हैं, तो आपको गोल्ड मेडल मिलता है। उसे (विनेश) गलत तरीके से अयोग्य घोषित किया गया था या नहीं, मुझे ये नहीं पता, लेकिन मुझे पता है कि वह कम से कम सिल्वर मेडल की हकदार हैं।

राशि फल

कुछ कार्य जिसकी पिछले कुछ दिनों से प्लानिंग चल रही है, आज शुरू हो सकता है, जिससे आपको आर्थिक स्थिति में लाभ होगा। व्यापार-व्यवसाय में परिवर्तन की योग बन रहे हैं	आज का दिन अच्छा है। परिवार में कोई नया सदस्य आ सकता है। आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव देखने को मिलेगा। व्यापार आदि में सहयोगी पार्टनर के माध्यम से आय के नए स्रोत बनेंगे	किसी कार्य विशेष को लेकर आज यात्रा आदि पर बाहर जा सकते हैं। यात्रा में सावधानी बरतें, नहीं तो आपको नुकसान हो सकता है। साथ ही परिवार में किसी अपने के स्वास्थ्य से आप चिंतित रह सकते हैं।	आज आप व्यर्थ की भागदौड़ से परेशान हो सकते हैं। आपका मन अशांत रहेगा। कार्य की अधिकता के कारण थकावट आदि महसूस होगी।
आज आप मानसिक रूप से उलझे रहेंगे। किसी बात को लेकर परिवार में परेशानी बढ़ सकती है, लेकिन आप अपनी कुशलता से उसे हल करने में सफल होंगे। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।	नौकरी आदि के लिए यदि प्रयास कर रहे हैं तो, आज आपको सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य आपका ठीक रहेगा, परंतु परिवार में माता-पिता का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है।	आज आपका कोई महत्वपूर्ण कार्य न होने से आप मानसिक तौर से परेशान रह सकते हैं। आर्थिक स्थिति के कारण आपको किसी से मदद मांगनी पड़ सकती है। व्यापार-व्यवसाय में भी इस समय गिरावट महसूस होगी।	आज आप पतने के स्वास्थ्य को लेकर कुछ परेशान रहेंगे। परिवार के लोग सहयोग करेंगे। व्यापार-व्यवसाय में अपने साथियों के विरोध के कारण आपको बड़ा नुकसान हो सकता है।
स्वास्थ्य को लेकर आप परेशान हो सकते हैं। साथ ही नौकरी आदि में अधिकारी वर्ग से मतभेद बढ़ने से आपकी परेशानी बढ़ेगी।	आज का दिन आपके लिए लाभदायक रहेगा। किसी अपने के द्वारा आपको कार्यक्षेत्र में बड़ा काम मिल सकता है, जिस कारण मन प्रसनन रहेगा।	आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मानसिंक शांति रहेगी लेकिन असंतोष भी रहेगा। परिवार में शांति बनी रहेगी। पिता का सहयोग मिलेगा।	मान-सम्मान बढ़ेगा। नौकरी में पदोन्नति के योग हैं। आत्मविश्वास बन रहेगा। शिक्षा से जुड़े काम सफल होंगे।

बुमराह मेरे 300की0मी0 स्मैश शॉट को नहीं झेल पाएंगे' साइना नेहवाल ने आखिर क्यों कहा ऐसा, जिससे हर कोई हो गया हैरान

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिली। भारतीय बैडमिंटन स्टार साइना नेहवाल ने क्रिकेटर जसप्रीत बुमराह को लेकर शुभांकर मिश्रा के यूट्यूब चैनल पर एक ऐसा बयान दिया, जिससे हर कोई हैरान है। साइना ने कहा कि जसप्रीत बुमराह उनके 300 की रफ्तार वाला स्मैश नहीं झेल पाएंगे।साइना नेहवाल ने ऐसा क्यों कहा, आइए जानते हैं दरअसल, कोलकाता नाइट राइडर्स के स्टार अंगकृष रघुवंशी ने कमेंट करते हुए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा था कि चलिए देखते हैं कि जब बुमराह 150 किमी की रफ्तार से सिर पर बाउंसर करते हैं तो वह कैसे जाती हैं। हालांकि, केकेआर स्टार ने इस कमेंट के लिए माफी भी मांग ली थी और पोस्ट को डिलीट कर दिया था।इस बीच साइना नेहवाल ने शुभांकर मिश्रा के यूट्यूब चैनल पर बात करते हुए एक बार फिर जसप्रीत बुमराह, क्रिकेट और बैडमिंटन के बारे में बाक की। साइना ने कहा कि वैसे भी मैं जसप्रीत बुमराह का सामना क्यों करूंगी? अगर मैं 8 साल से खेल रही होती तो शायद मैंने बुमराह को जवाब दिया होता अगर जसप्रीत बुमराह जैसे बड़े खिलाड़ी बैडमिंटन खेलते हैं, तो शायद वे आपके स्मैश को रोक नहीं पाएंगे। हमें अपने ही देश में इन चीजों के लिए आपस में नहीं लड़ना चाहिए। यही मैं (पहले) कहना चाहता हूं। हर खेल अपनी जगह सर्वश्रेष्ठ है, लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि दूसरे खेलों को भी महत्व दें। हम खेल संस्कृति कहां से लाएंगे और क्रिकेट, बॉलीवुड हमेशा हमारा फोकस रहेगा।

सम्पादकीय

विश्वसनीय व्याख्या के लिए वास्तविक अर्थ जरूरी, प्रेमपूर्ण संगति अहम

'मृत्यु के निकट अनुभव' यह नहीं दर्शाते कि जीवन के बाद भी कुछ है, बल्कि यह दर्शाते हैं कि प्रेमपूर्ण संगति में अच्छी तरह से मृत्यु संभव है। वे हमें मृत्यु के बारे में कुछ गहन और सुंदर बातें बताते हैं। मृत्यु के निकट अनुभव' बताते हैं कि मृत्यु इतनी भयावह नहीं भी हो सकती है, जितनी अमूमन उसे समझा जाता है। मृत्यु दो दुनियाओं के बीच का दरवाजा भी हो सकती है। मुमकिन है कि उस पार कुछ ऐसा इंतजार कर रहा हो, जिसके बारे में हमने अपने सबसे सुंदर ख्वाब में भी न सोचा हो।आखिर मरने के बाद होता क्या है? विभिनन धर्मों के दर्शन में इस पर तमाम विचार मिलते हैं, लेकिन क्या मालूम वे सच हैं भी या नहीं? जब तक कोई खुद अपनी आंखों से न देखे, तब तक कैसे मान ले कि मृत्यु के बाद हम जाते कहां हैं। कोई जाने के बाद लौट कर आया हो, और वह बताए, तो एक बार को मान भी लें।हालांकि इस दुनिया में कई लोग ऐसे हैं, जो मृत्यु को छूकर वापस लौटे। यानी, कुछ पल के लिए मर गए, लेकिन फिर वह लौटे। मृत्यु के निकट के ये अनुभव विस्मय को जगाते हैं- वे हमें 'ईश्वर की नजर' से यह देखने का मौका देते हैं कि वास्तव में इससे परे क्या है। वे हमें ब्रह्मांड के किनारे तक ले जाते हैं। हालांकि यह बिल्कुल वैज्ञानिक विचार नहीं है, लेकिन हममें से ज्यादातर लोगों को इस बात की एक आम समझ है कि 'मृत्यु के निकट अनुभव' का क्या मतलब है।जाहिर है, मृत्यु के निकट अनुभव का मतलब एक ऐसी स्थिति से है, जिसमें किसी का जीवन खतरे में होता है। जिन लोगों ने इसका अध्ययन किया है या इस पर चर्चा की है, उनमें से अधिकांश इस बात पर सहमत हैं कि 'मृत्यु के निकट अनुभव' के रूप में गिनने के लिए ऐसा अनुभव तब होना चाहिए, जब व्यक्ति पूरी तरह सचेत न हो और उसमें निमनलिखित पहलू पर्याप्त हों : शरीर से परे होने का अनुभव, जिसमें व्यक्ति को भौतिक रूप से ऊपर तैरने का अनुभव होता है और वह खुद को तथा अपने आसपास के वातावरण को देख सकता है।ऐसे में व्यक्ति अपने जीवन की समीक्षा करता है, और मृतक परिजनों या पूज्य धार्मिक व्यक्तियों द्वारा संरक्षित क्षेत्र (गहन अंधेरे में रोशनी, द्वार या बाड़ से घिरा क्षेत्र, नदी के दूसरे किनारे) की ओर बढ़ने का मार्गदर्शन पाता है। कई लोग जो 'मृत्यु के निकट अनुभव' से गुजर चुके हैं, वे गंभीरतापूर्वक बदलाव की बात करते हैं-उन्हें मृत्यु का भय कम सताता है, वे ज्यादा आध्यात्मिक, ज्यादा सकारात्मक एवं मददगार होते हैं। वे नैतिकता के प्रति ज्यादा चिंतित होते हैं। ऐसे अनुभव पूरे इतिहास में और विभिनन संस्कृतियों में पाए जाते हैं।प्लेटो ने द रिपब्लिक में इनमें से एक का वर्णन किया है-एर का मिथक। (यह एर नामक एक सैनिक की कहानी है, जिसे मरा हुआ मान लिया जाता है और वह पाताल लोक में चला जाता है। पर जब वह पुनर्जीवित होता है, तो उसे लोगों को यह बताने के लिए भेजा जाता है कि परलोक में कौन-सी चीज उनका इंतजार कर रही है। एर परलोक का वर्णन करता है, जहां दयालु को पुरस्कृत किया जाता है और दुष्टों को दंडित किया जाता है।) 'मृत्यु के निकट अनुभव' आंशिक रूप से व्यक्ति की जीवन स्थिति, धर्म और संस्कृति के विवरण पर निर्भर होते हैं, लेकिन कुछ सामान्य तत्व भी हैं। उदाहरण के लिए, धार्मिक आकृतियां अलग-अलग हो सकती हैं-एक ईसाई को ईसाई आकृतियां दिखाई देंगी, एक बौद्ध को बौद्ध आकृतियां दिखाई देंगी और एक हिंदू को 'मृत्यु के निकट अनुभव' में हिंदू देवी-देवताओं की आकृतियां दिखाई देंगी। फिर भी गहरे स्तर पर सम्मानित व्यक्तियों द्वारा मार्गदर्शन मिलता है, तथा ज्ञात से अज्ञात की ओर यात्रा होती है। यह शायद सबसे कठिन यात्रा है, जीवन से मृत्यु तक। हमारी अंतिम यात्रा या हमारी यात्रा के अंतिम चरण पर प्रेमपूर्ण मार्गदर्शन गहरा प्रभाव डालता है।लोकप्रिय साहित्य में 'मृत्यु के निकट अनुभव' की व्याख्या लगभग हमेशा 'अलौकिक रूप से' की जाती है। मानो वे यह दिखाते हैं कि मन मस्तिष्क जैसा नहीं है और मस्तिष्क के काम करना बंद करने के बाद भी मन सक्रिय रह सकता है, और यह भी कि मन का किसी तरह से 'स्वर्ग' या गैर-भौतिक क्षेत्र से संपर्क होता है। 'मृत्यु के निकट अनुभव' से संबंधित पुस्तकों के शीर्षक बताते हैं कि 'स्वर्ग वास्तव में होता है' या हमारे पास 'स्वर्ग का सबूत' है। इन मुद्दों पर लिखने वाले न्यूरोसाइंटिस्ट दावा करते हैं कि 'मृत्यु के निकट अनुभव' 'मृत्यु के बाद के जीवन का सबूत' और 'जीवन से परे चेतना' प्रदान करते हैं। वे उन्हें मृत्यु के बाद की यात्रा मानते हैं।अलौकिक व्याख्या के समर्थक इस पर जोर देते हैं कि वे 'वास्तविक' हैं।

रचनात्मक प्रवाह में मस्तिष्क पर बहुत जोर नहीं देना पड़ता

जब कभी शांत महसूस कर रहे हों और हर कार्य में आनंद का बोध हो, तो यह रसायनों का उत्पात नहीं, बल्कि रचनात्मक ऊर्जा का प्रवाह है। कभी आपके साथ ऐसा हुआ कि आपने कोई संगीत सुना

और उसमें डूब गए, या कुछ लिखने बैठे, तो मन इतना शांत रहा कि हर शब्द के पीछे रचनात्मक ऊर्जा महसूस होने लगी हो, या आप कोई फिल्म देख रहे हैं, और उसमें इतना खो गए कि कुछ समय तक दुनिया को ही भूल गए? कोई थकावट नहीं हुई। इसके उलट कई बार ऐसा होता है कि लिखने बैठते हैं, तो पूरा समय चला जाता है, फिर भी हम सटीक ढंग से उस बात को नहीं लिख पाते, जो हम लिखना चाहते हैं। लेकिन जब हम सही मनोदशा में होते है, तो लगभग बिना कलम रोके लिखते चले जाते हैं। यही रचनात्मक प्रवाह होता है। लेकिन क्या आपने सोचा है कि इस दौरान हमारे दिमाग में कौन-सी रासायनिक क्रियाएं चल रही होती हैं फिलाडेल्फिया में ड्रेक्सेल विश्वविद्यालय में मनोवैज्ञानिक और मस्तिष्क विज्ञान के प्रोफेसर का कहना है कि रचनात्मक प्रवाह में हमें मस्तिष्क पर बहुत जोर नहीं देना पड़ता है। पूरा ध्यान काम पर होता है। यह आनंददायक होता है और कोई विचलन नहीं होती। हम बागवानी करते, खाना बनाते, बातचीत करते, संगीत सुनते, या लिखते समय इसका अनुभव कर सकते हैं। जब हमारे मस्तिष्क में रचनात्मक प्रवाह होता है, तो सारी समस्याओं का समाधान तुरंत होता है। आमतौर पर जब हम रचनात्मक प्रवाह में होते हैं, तो समय कब और कितनी जल्दी बीत जाता है, हमें पता ही नहीं चलता। मनोवैज्ञानिक रचनात्मक प्रवाह के बारे में 50 साल से भी अधिक समय से शोध कर रहे हैं, जिसकी शुरुआत मनोवैज्ञानिक मिहाली सिक्सजेंटमिहाली ने की थी। वैज्ञानिकों ने मस्तिष्क के बाएं और दाएं, दोनों हिस्सों द्वारा किए जाने वाले विशिष्ट कार्यों की पहचान की है। 1990 के दशक में न्यूरो-साइकोलॉजिस्ट एल्खोनन गोल्डबर्ग ने बताया कि मस्तिष्क के दो गोलार्ध अनुभूति और रचनात्मकता में अलग-अलग भूमिका निभाते हैं।

सिर्फ जीडीपी काफी नहीं, जीईपी को साथ लेकर चलने से बनेगी बात

जीडीपी आर्थिक प्रदर्शन का व्यापक रूप से स्वीकृत माप है, परंतु आर्थिक गतिविधियों से जुड़ी पर्यावरणीय लागतों और लाभों को ध्यान में रखते हुए यह आर्थिकी के वास्तविक आकलन की एक कमजोर कड़ी है। जबकि सकल पर्यावरणीय उत्पाद (जीईपी) की अवधारणा मानव सहित सभी जीवों के कल्याण और अर्थव्यवस्था में प्रावृतिक पारिस्थितिक तंत्र के योगदान को मापने के सार्थक दृष्टिकोण के रूप में उभरी है। विश्व के लगभग सभी देश अपनी अर्थव्यवस्था को सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के मानकों से आंकते हैं। भूटान सकल राष्ट्रीय प्रसनन्ता (ग्रॉस नेशनल हैप्पीनेस) को अपना सबसे बड़ा आधार मानता है। लेकिन 19 जुलाई को उत्तराखंड ने अपनी अर्थव्यवस्था के आकलन के लिए जिस मानक की घोषणा की, वह अद्वितीय है। सकल पर्यावरणीय उत्पाद (जीईपी) को अपनी अर्थव्यवस्था का मानक मानने वाला यह हिमालयी राज्य देश का पहला ऐसा राज्य है, जो दुनिया भर के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण बन गया है। हालांकि ऐसी आर्थिक विकास की नीति कोस्टारिका तथा कुछ अन्य देशों में आंशिक रूप से प्रभावी है। इस अवधारणा को आगे बढ़ाने के लिए वर्षों से प्रयासरत पर्यावरणविद डॉ अनिल जोशी और उत्तराखंड प्रशासन की यह पहल स्वागत योग्य है, परंतु इस पर इतनी चर्चा नहीं हो रही, जितनी होनी चाहिए। जीडीपी आर्थिक प्रदर्शन का व्यापक रूप से स्वीकृत माप है, परंतु आर्थिक गतिविधियों से जुड़ी पर्यावरणीय लागतों और लाभों को ध्यान में रखते हुए यह आर्थिकी के वास्तविक आकलन की एक कमजोर कड़ी है। जबकि सकल पर्यावरणीय उत्पाद (जीईपी) की अवधारणा मानव सहित सभी जीवों के कल्याण और अर्थव्यवस्था में प्रावृतिक पारिस्थितिक तंत्र के योगदान को मापने के सार्थक दृष्टिकोण के रूप में उभरी है। महात्मा गांधी ने जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली, न कि लालच की पूर्ति करने वाली, आर्थिकी का दर्शन दिया था। सुंदरलाल बहुगुणा ने 'पारिस्थितिकी ही स्थायी आर्थिकी है' का सिद्धांत दिया था। सकल पर्यावरणीय उत्पाद (जीईपी) एक अभिनव मानदंड है, जिसे प्रकृति द्वारा प्रदान की गई पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को मापने और महत्व देने के लिए तैयार किया गया है। जीईपी का लक्ष्य इन विविध योगदानों को एकल मौद्रिक मूल्य में समाहित करना है, जो आर्थिक और सामाजिक कल्याण के समर्थन में प्राकृतिक पूंजी के वास्तविक मूल्य को दर्शाता है। जीईपी मूल्यांकन पर्यावरणीय कारकों को शामिल करके आर्थिक प्रदर्शन का अधिक व्यापक मूल्यांकन प्रदान करता है। प्रकृति के नियमों के साथ पूर्ण राजनीतिक निष्ठा से जीईपी को अपनाने से सतत राष्ट्रीय विकास प्रथाओं को प्रोत्साहन मिल सकता है। यह बदलाव अधिक संतुलित और दीर्घकालिक विकास रणनीतियों को जन्म दे सकता है, जो आर्थिक विकास का तालमेल पर्यावरणीय प्रबंधन के साथ बनाए रखती है। वैसे जीईपी की अवधारणा भौगोलिक क्षेत्र और सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने के अनुरूप भिनन हो सकती है, लेकिन सामान्यतः इसकी गणना में कई चरण और पद्धतियां समाहित हैं, जो पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं की जटिलता और विविधता को दर्शाती हैं। पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के मूल्यांकन में उपयोग किए जाने वाले प्रमुख दृष्टिकोण हैं : बाजार-आधारित मूल्यांकन, प्रतिस्थापन लागत विधि, आकस्मिक मूल्यांकन और लाभ अंतरण। जीईपी का उद्देश्य एक ही है-पारिस्थितिकी-केंद्रित सतत सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक विकास। उत्तराखंड में जो जीईपी लागू किया जाना है, उसमें पर्यावरण के चार घटकों (जल, वायु, वन और मिट्टी) संबंधी सूचकांक शामिल हैं। आर्थिक विकास की नीतियों, योजनाओं और प्रक्रियाओं में पर्यावरण के इन घटकों की गुणवत्ता सुनिश्चित रखना किसी भी प्रशासन का नैतिक दायित्व है और इसे मूर्त रूप देने में उत्तराखंड सरकार ने पर्यावरण-नैतिकता के प्रदर्शन का साहस दिखाया है। जीईपी को कार्रवाई योग्य नीतियों और निणर्यों में बदलने के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति और संस्थागत क्षमता की आवश्यकता है। सरकारों और संगठनों को अपनी योजना प्रक्रियाओं में जीईपी को एकीकृत करने और पर्यावरणीय स्थिरता के साथ आर्थिक प्रोत्साहन में तालमेल बनाना चाहिए। उत्तराखंड में एक जीईपी सेल की स्थापना की बात कही गई है, जो जीईपी के क्रियान्वयन को सुनिश्चित करेगी। जीईपी को नीति आयोग के साथ जोड़ने और इसे पूरे देश के लिए लागू करने की आवश्यकता है। जीईपी आर्थिक प्रगति और स्थिरता पर पुनर्विचार करने के लिए एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण प्रदान करता है। प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र द्वारा प्रदान किए गए असंख्य लाभों को महत्व देकर जीईपी आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच अंतर को पाटता है। इसमें नीतियों को नया आकार देने, टिकाऊ प्रथाओं का मार्गदर्शन करने और मनुष्यों और प्रकृति के बीच अधिक सामंजस्यपूर्ण संबंध को बढ़ावा देने की क्षमता होती है। जीईपी को अपनाना न केवल एक आर्थिक अनिवार्यता है, बल्कि भावी पीढ़ियों के लिए ग्रह की सुरक्षा का एक नैतिक दायित्व भी है।

खतरों के बावजूद साहस दिखा रहे लोग

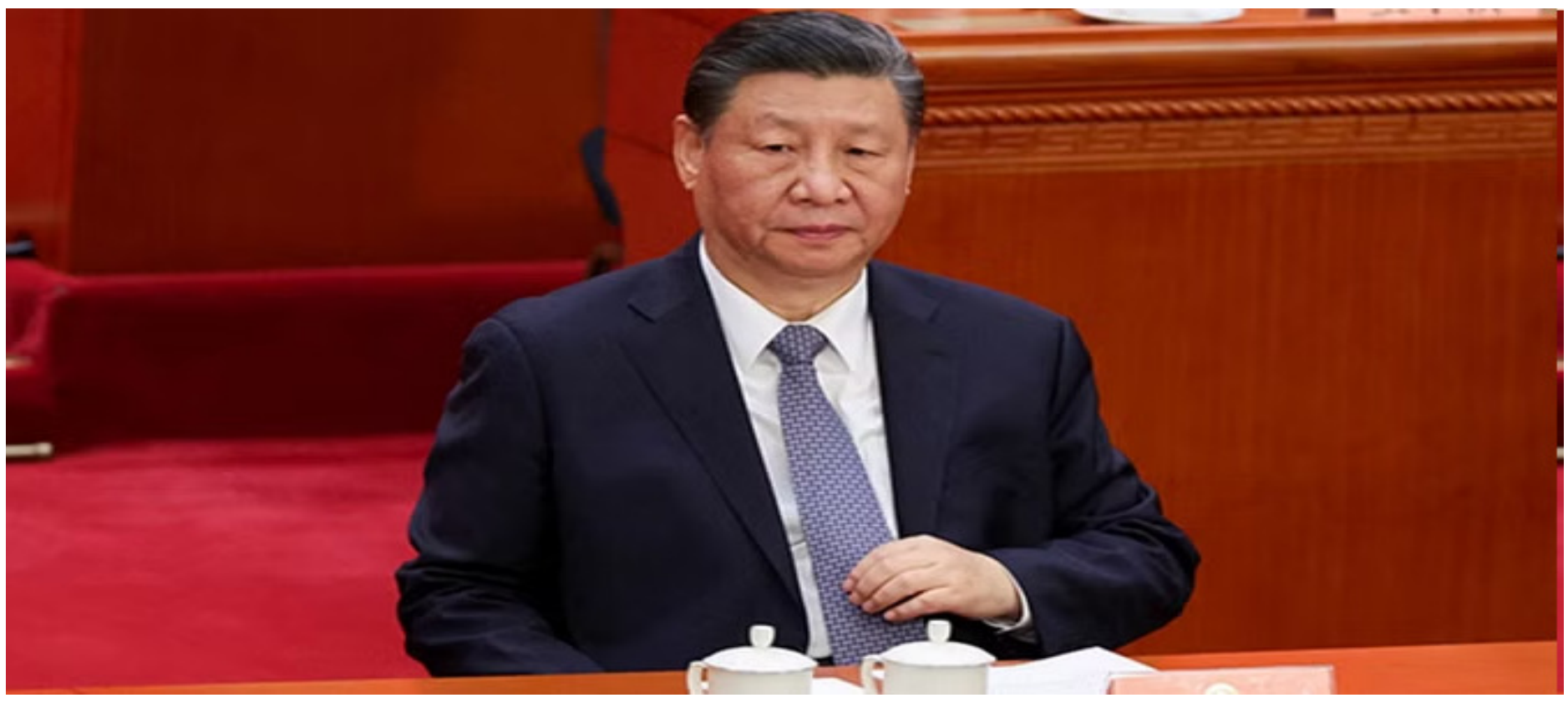

अगर पार्टी के दृष्टिकोण से देखा जाए तो चीन में अधिक असहमति है। चीनी सरकार के खिलाफ बोलने या लिखने पर नौकरी से हाथ धोने, गिरफ्तार होने, प्रताड़ना झेलने या मारे जाने तक का खतरा बना रहता है, फिर भी कुछ लोग सच बोलने का साहस दिखाते हैं जॉर्ज ऑरवेल के उपन्यास '1984' की प्रसिद्ध पंक्तियों में से एक है- ङ्घजो अतीत को नियंत्रित करता है, वह भविष्य को भी नियंत्रित कर सकता है। जो वर्तमान को नियंत्रित करता है, वह अतीत को भी नियंत्रित कर सकता है।ङ्घ इस कथन को कहते हुए ऑरवेल के मन में स्टालिन का रूस था, लेकिन उनका यह कथन सभी अधिनायकवादी शासकों पर कमोबेश सच है, जहां सत्तारूढ़ दल और नेता इतिहास का अपना संस्करण जनता पर थोपना चाहते हैं। लेकिन अपेक्षाकृत खुले समाज में इतिहास का कोई भी एक संस्करण समग्र रूप से नागरिकों पर नहीं थोपा जा सकता। उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका में जब रिपब्लिकन सत्ता में होते है तो वे नसल संबंध कैसे थे या होने चाहिए, इस पर अपना दृष्टिकोण थोपने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन उनके इन विचारों का उन लोगों द्वारा अक्सर विरोध होता है, जो इस घटना को अलग तरीके से देखते हैं।भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में भी अतीत पर राज्य प्रायोजित दृष्टिकोण गहन बहस के विषय हैं। उदाहरण के लिए, मोदी सरकार ने अपने सभी मौजूदा संसाधनों के साथ हिंदू-मुस्लिम संबंधों की एक खास तस्वीर पेश करने की कोशिश की है। इस कोशिश में देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के योगदान को कम करने की कोशिश भी शामिल है। फिर भी ऐसी वेबसाइट्स, प्रकाशन संस्थान, यूट्यूब चैनल और अखबार, जो बिना शासनादेश के चलते हैं और जहां लोग इन विषयों को अलग तरीके से समझते हैं, सार्वजनिक रूप से अपने विचार व्यक्त कर सकते हैं। ऐसी स्वतंत्र आवाजों के दमन के लिए ही मोदी सरकार एक नया 'ब्रॉडकास्टिंग बिल' लाने की तैयारी में है।वर्तमान समय में किसी भी संगठन ने इस विचार कि 'लोग कैसे सोचते हैं या क्या सोचते हैं' पर इतनी सख्ती से नियंत्रण करने की कोशिश नहीं की है, जितनी कि चीन की कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीसी) ने। अपने देश के अतीत, वर्तमान और भविष्य की प्रस्तुति में सीपीसी ने चार मुख्य प्रस्तावों की रूपरेखा के दायरे में काम किया है-पहला, पार्टी और नेता हमेशा सही होते हैं। दूसरा, पार्टी के कैडर, पदाधिकारी और महान नेता, चीन को उननति की राह पर ले जाने के साथ उसे मजबूत तथा समृद्ध बनाने के लिए हर मौसम में दिन-रात मेहनत करते हैं। तीसरा, जो सार्वजनिक या निजी तौर पर पार्टी की नीतियों या उसकी प्रथाओं की आलोचना करते है, वे देश के दुश्मन हैं और विदेशी ताकतों के इशारों पर काम करते हैं। चौथा, यदि पार्टी इस तरह की आलोचनाओं से सख्ती से नहीं निपटती है तो चीन 1949 के पहले वाले अंधकार युग में लौट जाएगा, जब इसे विभाजन, विवाद और गृह युद्ध एवं पश्चिमी शक्तियों ने पंगु बना दिया था। अगर पार्टी के दृष्टिकोण से देखा जाए तो चीन में अधिक असहमति है। 1949 के बाद भी सरकार के खिलाफ बोलने या लिखने पर नौकरी से हाथ धोने, गिरफ्तार होने, प्रताड़ना झेलने या मारे जाने तक का खतरा बना रहता था। फिर भी जैसा कि एक हालिया पुस्तक दर्शाती है, कुछ लोग अब भी साथी नागरिकों को आधुनिक चीनी इतिहास और विशेष रूप से कम्युनिस्ट पार्टी के इतिहास की सच्चाई पेश करने के लिए इन जोखिमों को उठाने का साहस करते हैं। हाल में आई किताब का नाम है- 'स्पार्क्स : चाइनाज अंडरग्राउंड हिस्टोरियन्स एंड देयर बैटल फॉर द फ्यूचर'। किताब के लेखक हैं इयान जॉनसन, जिन्होंने सरकार द्वारा निष्कासित किए जाने से पहले कई सालों तक चीन में रिपोर्टिंग की है। अपनी किताब में जॉनसन पाठकों को चीन के परिदृश्य, शहरी और ग्रामीण सभ्यता-संस्कृति के साथ उसके समृद्ध कला-साहित्य और दर्शन के बारे में भी जानकारी देते हैं। जॉनसन 1949 से 1976 तक सत्ता में रहे माओत्से तुंग द्वारा अपने लोगों पर की जाने वाली निदयता के बारे में भी बेबाकी से लिखते हैं। माओ को दुश्मनों की जरूरत थी और वे उन्हें हर जगह मिल जाते थे, खेतों में, कारखानों में, शहर और देश में, यहां तक कि कम्युनिस्ट पार्टी के अंदर भी। लाखों मेहनतकश चीनी नागरिक, जिन्होंने कभी कोई अपराध नहीं किया, उन्हें भी माओ के गुंडों ने दुश्मन के रूप में नामित किया। अगर वे भाग्यशाली होते थे तो उन्हें सिर्फ अपने घरों से बेदखल किया जाता था या किसी छोटे-मोटे काम पर लगा दिया जाता था। ऐसा नहीं होने पर या तो जेल में डाल दिया जाता था या मार दिया जाता था। माओ सनक और जानलेवा इरादों का एक अनोखा मिश्रण था। 1956 में उसने 'सौ फूल खिलें' कहकर लोगों से मन की बात कहने का आह्वान किया। जब लोगों ने उनकी बात मान ली तो उसने अपना आह्वान वापस ले लिया और दक्षिण पंथ विरोध अभियान शुरू कर दिया, जिसमें लेखकों, शिक्षकों, छात्रों, वकीलों, प्रबंधकों और वैज्ञानिकों जैसे दूर की सोच रखने वालों का सफाया हो गया। जॉनसन लिखते हैं, इस प्रक्रिया में विश्वविद्यालय, उच्च विद्यालय, अनुसंधान संस्थान और सरकारी कार्यालय नष्ट हो गए। लाखों की संख्या में लोगों को मजदूरों के कैंप में भेज दिया गया। वे खुद को बचाने के लिए पार्टी के आदेशों का हूबहू पालन करने की कोशिश कर रहे थे। जॉनसन के अनुसार, भूमिगत हुए लेखकों में से कई उनके बच्चे या भाई-बहन थे, जिनको राज्य द्वारा या तो जेल में डाल दिया गया था या मार दिया गया था। ऐसे लोगों की पीड़ा चीन में कम्युनिस्ट शासन के काले पक्ष के बारे में जनता को सचेत करने के लिए प्रेरित करती है। जॉनसन जिन असंतुष्टों के बारे में लिखते हैं, उनमें से कई पहले खुले विचारों वाले थे। इंटरनेट के विकास की वजह से उन लोगों को लेखन और फिल्मों को प्रचारित करने का अवसर मिला। उनका समय बौद्धिक स्वतंत्रता का समय था। 2012 में शी जिनपिंग के सत्ता में आने के बाद इन स्वतंत्र इतिहासकारों का काम और कठिन हो गया। अपने कार्यकाल की शुरुआत में शी ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के इतिहास को बेहतरीन तरीके से पेश करने की बात कही। राज्य द्वारा नियुक्त इतिहासकारों के समूह को स्वतंत्रता का जशन मनाने का आदेश दिया गया। उन्हें इस बात का भी ध्यान रखने के लिए कहा गया कि युवा और बच्चे पार्टी और उनके नेताओं के बलिदान से अच्छी तरह वाकिफ हों। इसके अलावा सरकारी पत्रकारों से भी पार्टी के इतिहास को बिगाड़ने और बदनाम करने वाली प्रवृत्ति का विरोध करने को कहा गया। माओ के समय की तरह शी जिनपिंग के समय में भी कुछ लोगों ने विरोध में आवाज उठाना जारी रखा। जैसा कि जॉनसन लिखते हैं कि सच्चाई यह है कि स्वतंत्र विचार चीन में रहते हैं और इसे कुचला नहीं गया है।ङ्घ कुछ लेखक, पत्रकार, कलाकार और फिल्म निर्माता यह दिखाना जारी रखेंगे कि पार्टी हमेशा नहीं जीतती।ङ्घ इस पुस्तक में लोगों के बारे में पढ़ते हुए मैं उनके नैतिक और शारीरिक साहस से प्रभावित हुआ, लेकिन साथ ही उनकी बौद्धिक स्पष्टता से भी। एक महिला लेखिका जियांग जू कम्युनिस्ट चीन में इतिहास के बारे में यह कहती हैं कि ङ्घहमें इतिहास को फिर से लिखना चाहिए। लेकिन इतिहास घटित हो चुका है। अगर यह एक उपन्यास है तो आप इसे फिर से लिख सकते हैं। लेकिन अगर यह इतिहास है तो आप इसे कैसे फिर से लिख सकते हैं विवेक वाला कोई भी व्यक्ति फिर से लिखे गए इतिहास को अस्वीकार कर देगा।किताब में एक अन्य पात्र झांग शिहे नामक एक पुरुष पत्रकार कहता है, मैं जैसा लिखता हूं, वैसा ही करता हूं, क्योंकि मैं उन लोगों में से एक हूं, जो यह सब देखकर क्रोधित हो जाता है और मुझे बोलना पड़ता है।ङ्घ किताब में ही तीसरे पात्र के रूप में शिक्षाविद चेन होंगू विडंबनापूर्ण ढंग से पूछते हुए दिखते हैं, ङ्घक्या हमारे युग की यही राजनीति है, जहां पागल लोग अंधे को रास्ता दिखाते हैं?ङ्घ और अंत में फिर से जियांग जू है, जो एक ऐसे मित्र को जवाब दे रही है, जिसने उससे कहा था कि उसका काम व्यर्थ और अप्रासंगिक है और कम्युनिस्ट चीन जैसे कड़े नियंत्रण वाले तानाशाही में इसका कोई प्रभाव नहीं हो सकता- लेकिन मैं असहमत हूं। अगर आप कोशिश करते हैं तो यह मायने रखता है। मैं एक असामान्य समाज में एक सामान्य व्यक्ति बनना चाहती हूं। मैं सच्ची बातें कहने और दिल की बात व्यक्त करने में सक्षम होना चाहती हूं।

DURGAWATI INTERNATIONAL
School & College Meja, Prayagraj
(AFFILIATED TO NEW DELHI I.C.S.E. (AFFILIATION No. UP 481)
Good News Good News
READ LEAD SUCCEED
THE STUDENTS SCORING ABOVE 95% IN THE ENTRANCE EXAM ARE AWARDED WITH THE CONCESSION IN THE ENTIRE TUITION FEES OF THE WHOLE YEAR 2024-25 HURRY UP!!
HOSTEL FACILITY
* AC hostel facilities are available for. the boys from class 3rd onwards.
* Quality food
* Personal care
* 24/7 power backup
* Special tuition classes for hostelers
* Free health checkup per month.
* Infirmary faciliti is also available
* Well equipped laboratories and digital Library
पहले 50 छात्रों के प्रवेश शुल्क पर 100% की छूट
Admissions OPEN
PG to IX, XI
(AFFILIATED TO NEW DELHI ICSE (AFFILIATION No. UP 481)
SCHOOL FACILITIES
* Affordable fee & High-tech infrastructure.
* Spacious and colorful classrooms.
* Trained teachers from Kerala & Prayagraj.
* Free personality development.
* English spoken classes for each student.
* RO water and CCTV facilities.
* Pick and drop facilities with full safety.
* Trained PE Teacher along with
* Spacious playground
Manager
Dr. (Smt.) Swatantra Mishra
(Psychologist)
Email : www.disaldd@gmail.com Durgawati International School
Call For Any Enquiry 7505561664
Contact No.: 7081152877, 7652002511, 9415017879

छात्र नौजवान जागरूकता अभियान के तहत आज सेक्टर 75 में लोहिया वाहिनी ने चलाया सदस्यता अभियान

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नोएडा। सपा नोएडा महानगर के सदस्यता अभियान के तहत आज

सपा नोएडा महानगर लोहिया वाहिनी संगठन ने महानगर अध्यक्ष डॉक्टर आश्रय गुप्ता के अध्यक्षता में सेक्टर 75 स्थित सुंदर मार्केट में सदस्यता अभियान चलाया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व मंत्री राकेश यादव,अयूब अंसारी सपा यूथ ब्रिगेड के प्रदेश अध्यक्ष अनीस राजा एवं प्रदेश उपाध्यक्ष सौरव यादव उपस्थित रहे। साथ ही साथ सभी लोगों ने फूलन देवी की जयंती पर उनको पुष्प अर्पित कर उनको नमन किया। महानगर अध्यक्ष डॉक्टर आश्रय गुप्ता ने कहा कि सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के लक्ष्य के अनुसार छात्र ,नौजवान, पिछड़े, दलित, अल्पसंख्यकों के लिए परेशान छात्र व नौजवान है। वरिष्ठ नेता सुंदर यादव व प्रदेश सचिव सुनील चौधरी ने कहा कि 2027 में उनके बीच में जाकर उनकी समस्याओं को जानेंगे और सदस्यता अभियान चला कर उन्हें जागरूक किया जाएगा। पूर्व मंत्री राकेश यादव ने कहा कि वर्तमान सरकार में महंगाई व भ्रष्टाचार अपने चरम पर है। पूर्व मंत्री अयूब अंसारी ने कहा वर्तमान सरकार पिछड़े, दलित, अल्पसंख्यकों के साथ भेदभाव कर रही है। वही यूथ ब्रिगेड के प्रदेश अध्यक्ष अनीश राजा ने कहा कि आज नौजवान बेरोजगारी के कारण आत्महत्या को मजबूर हो गए हैं, वर्तमान सरकार में सबसे ज्यादा फिर से जब समाजवादी पार्टी की सरकार बनेगी तो छात्रों, नौजवानों को रोजगार देने का काम समाजवादी पार्टी करेगी। सभा का संचालन महासचिव विकास यादव ने किया। कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य लोगों में वीर सिंह यादव, राकेश यादव, महेंद्र यादव, विवेक यादव, दिनेश यादव, सुमित अंबावत, कवित गुर्जर, अजीम अली जैदी, अंकुर यादव, कालू यादव ,अंकित यादव,नीतीश चौहान, दीपांशु चौहान, अमित यादव, महकार तंवर, सौरभ चौहान, दिलशाद खान, मुख्य रूप से मौजूद रहे।

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने खारिज की याचिका, फास्टैग टोल प्लाजा नियम को ठहराया वैध; दलीलों का कोई ठोस आधार नहीं

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने टोल शुल्क के संबंध में दायर जनहित याचिका को खारिज कर दिया है। याचिका में दलील दी

गई थी कि टोल प्लाजा की सभी लेन को फास्टैग लेन घोषित करना असंवैधानिक और मनमाना है, जिससे फास्टैग न लगाने पर दोगुना शुल्क वसूला जा रहा है। याचिकाकर्ता विजय प्रताप सिंह की ओर से दलील दी गई कि टोल वसूली और रोड टैक्स का भुगतान दोहरी कराधान है। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि राष्ट्रीय राजमार्ग अधिनियम, 1956 की धारा- 7 और संबंधित नियम 2008 के प्रावधानों के तहत टोल शुल्क वसूला जाता है। कोर्ट ने प्रतिवादी के वकील प्रांजल मेहरोत्रा की दलील को मान्यता दी, जिसमें कहा गया था कि फास्टैग के माध्यम से टोल भुगतान की सुविधा यात्रियों के लिए फायदेमंद है। इसमें कोई असंवैधानिकता नहीं है कोर्ट ने यह भी कहा कि रोड टैक्स और टोल शुल्क का उद्देश्य और अधिकार अलग-अलग है और एक दूसरे से स्वतंत्र है। याचिका में उठाई गई दलीलों का कोई ठोस आधार नहीं था, और इसलिए इसे खारिज कर दिया गया।

योगी बोले- बांग्लादेश में हिंदुओं पर अत्याचार पर सबके मुंह सिले हुए है उनकी रक्षा हमारा दायित्व है

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि हिंदुओं की

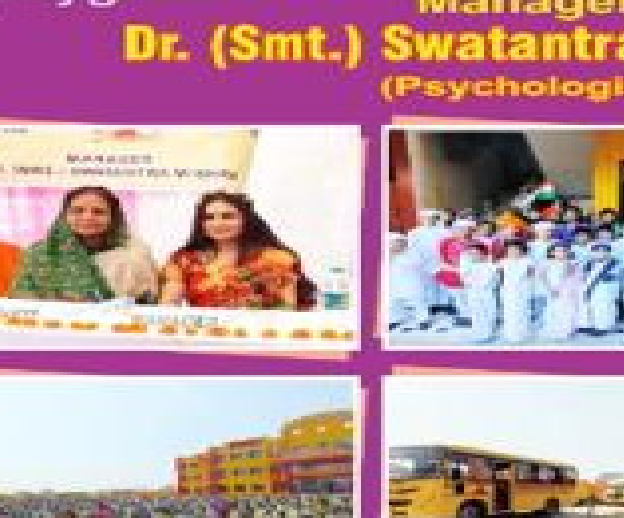

रक्षा करना हमारा दायित्व है। आज जब बांग्लादेश में हिंदुओं पर अत्याचार हो रहा है तो सबके मुंह सिले हुए हैं। मुख्यमंत्री शनिवार को अयोध्या के मिल्कीपुर में जनसभा को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि आज बांग्लादेश में हिंदुओं पर अत्याचार हो रहा है तो सबके मुंह सिले हुए हैं कोई नहीं बोल रहा है लेकिन हिंदुओं की रक्षा करना हमारा दायित्व है। एक मानव के नाते उसकी रक्षा करना हमारा दायित्व है। उन्होंने सभी विपक्षी पार्टियों को निशाने पर लेते हुए कहा कि ये लोग हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार पर इसलिए नहीं बोल रहे हैं कि उन्हें पता है कि इससे उन्हें वोट नहीं मिलेगा। सीएम योगी आदित्यनाथ अयोध्या के मिल्कीपुर में जनसभा को संबोधित कर रहे थे उन्होंने कहा कि हम हिंदुओं को बचाने के लिए आवाज उठाते रहेंगे। मानवता की रक्षा के लिए आवाज उठाते रहेंगे। जब जब राक्षसी प्रवृत्तियां ताकतवर होंगी हमें एकजुट होना होगा। भगवान श्रीराम तो राजकुमार थे चाहते तो अयोध्या में राज करते पर पिता का वचन निभाने के लिए निकल गए क्योंकि उन्हें राक्षसों का सर्वनाश करना था।मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि अयोध्या में राम मंदिर बनने से भगवान श्रीराम की नगरी को दुनिया भर में पहचान मिली है। दुनिया भर से रामभक्त दर्शन करने के लिए आ रहे हैं। अयोध्या में इंटरनेशनल एयरपोर्ट है। विकास हो रहा है। विश्व में अयोध्या की नई पहचान बन रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ गोरखपुर एयरपोर्ट से राजकीय वायुयान से महर्षि वाल्मीकि इंटरनेशनल एयरपोर्ट अयोध्या पहुंचे। यहां से अयोध्या विद्यापीठ कॉलेज की तरफ गए। मिल्कीपुर में जनसभा के लिए बड़ी संख्या मे लोग आए । बारिश के चलते कार्यक्रम स्थल मार्ग पर कीचड़ हो गया। लोगों को लंबी दूरी पैदल तय कर कार्यक्रम स्थल पर आना पड़ा रहा है। पार्किंग काफी दूर होने से लोगों को परेशानी हुई।

बॉलीवुड/टेली मसाला

सिंघम अगेन' को लेकर चल रही अफवाहों पर रोहित सेठी ने लगाया विराम स्टार्स के कैमियो पर तोड़ी चुप्पी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिली। 'शैतान', 'मैदान' और 'औरों में कहां था दम' के बाद अब अभिनेता अजय देवगन इस साल के आखिर में फिल्म 'सिंघम अगेन' में दिखाई देने वाले हैं। इस मूवी का निर्देशन रोहित शेट्टी ने किया है और फैंस फिल्म का बेसब्री के साथ इंतजार कर रहे हैं। अभी तक इस मूवी से जुड़ी कई अपडेट सामने आ चुके हैं। इसके साथ ही लंबे समय से यह भी कहा जा रहा था कि फिल्म में अजय के अलावा बाकी स्टार्स कैमियो रोल करते हुए दिखाई देने वाले हैं। ऐसे में अब खुद डायरेक्टर रोहित ने एक इंटरव्यू में इसकी सच्चाई बता दी है।बॉलीवुड के बेहतरीन डायरेक्टर में से एक रोहित शेट्टी इन दिनों अपनी कॉप यूनिवर्स फिल्म सिंघम अगेन को लेकर सुखिर्यों में बने हुए हैं। इस फिल्म में अजय देवगन के साथ कई अन्य स्टार्स भी दिखाई देने वाले हैं। अब हाल ही में निर्देशक ने फिल्म से जुड़ा एक किस्सा शेयर किया है और बताया है कि फिल्म में बाकी स्टार्स का रोल कैसा रहने वाला है। सिंघम दिवाली पर दस्तक देने वाली है और यह इस फ्रेंचाइजी की सिंघम और सिंघम रिटर्न्स के बाद तीसरी मूवी है। अजय देवगन के साथ फिल्म में दीपिका पादुकोण, टाइगर श्रॉफ, करीना कपूर खान, जैकी श्रॉफ, रणवीर सिंह, अक्षय कुमार और अर्जुन कपूर भी नजर आने वाले हैं। दरअसल, रोहित शेट्टी ने गलाटा इंडिया के साथ बातचीत में इस फिल्म से जुड़े कई किस्से शेयर किए। उन्होंने कहा कि जब आप कोई फिल्म बनाते हैं, तो उसमें बहुत सारे स्टार्स को एक साथ लाना बहुत मुश्किल काम होता है और ये मेरे लिए भी मुश्किल था। इतने स्टार्स किसी एक फिल्म में कभी नहीं आए इसके साथ ही डायरेक्टर ने यह भी शेयर किया कि फिल्म के क्लाइमैक्स की शूटिंग के दौरान एक जोक चल रहा था, जिसमें बोला गया कि मुंबई में किसी और फिल्म की शूटिंग नहीं चल रही है, क्योंकि सब यहां है। वहीं, सिंघम अगेन के डायरेक्टर ने उन अफवाहों पर भी विराम लगाया जहां पर यह कहा जा रहा था कि कुछ स्टार्स सिर्फ कैमियो कर रहे हैं, लेकिन ऐसा नहीं है वह पूरी मूवी में हैं।

सिंगर एडेल लॉरी ने रिच पॉल से की सगाई, कॉन्सर्ट के दौरान फैंस के साथ शेयर की गुड न्यूज

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिली। ब्रिटिश गायिका-गीतकार और संगीतकार एडेल लॉरी ब्लू एडकिंस जो एडेल नाम से मशहूर हैं, उन्होंने एक बार फिर अपने फैंस को सरप्राइज दे दिया है। सिंगर ने अमेरिकी खेल एजेंट और क्लुच स्पोर्ट्स ग्रुप के संस्थापक हैं रिच पॉल से सगाई कर ली है। इसकी जानकारी खुद सिंगर ने फैंस से साथ साझा की है। ब्रिटिश गायिका एडेल ने स्पोर्ट्स एजेंट रिच पॉल से सगाई कर ली है। सिंगर ने हाल ही में जर्मनी के म्यूनिख में एक संगीत कार्यक्रम के दौरान सगाई की अफवाहों पर विराम लगाते हुए इसकी घोषणा की । सोशल मीडिया पर उनका वीडियो काफी वायरल हो रहा है। हालांकि उन्होंने अपने मंगेतर के नाम का खुलासा नहीं किया है ।एडेल ने 9 अगस्त को एक संगीत कार्यक्रम के दौरान ये खुशखबरी साझा की। एडेल ने फैंस का एक मैसेज पढ़ा जिसमें लिखा था, क्या आप मुझसे शादी करेंगे ऐसे में इसके जवाब में लव इन द डार्क गायिका ने कहा, मैं तुमसे शादी नहीं कर सकती, क्योंकि मैं पहले से ही शादी कर रही हूं, लेकिन मैं इसकी सराहना करती हूं। फिर वह अपना बायां हाथ दिखाती है, जिसमें उन्होंने अपनी सगाई की अंगूठी पहनी हुई थी।एडेल और रिच पॉल ने पहली बार जुलाई 2021 में डेटिंग की अफवाह सामने आई थी। जब एनबीए फाइनल गेम में उनकी एक साथ तस्वीरें खींची गईं। इस जोड़े ने उसी साल सितंबर में अपने रिश्ते की पुष्टि की थी। ओपरा विन्फ्रे के साथ 2021 में एक साक्षात्कार के दौरान, एडेल ने रिच पॉल के साथ अपनी पहली मुलाकात के बारे में बताया था। उन्होंने कहा, मैं उनसे एक बर्थडे पार्टी में मिली थी, हम डांस फ्लोर पर थे और फिर हम कुछ साल बाद मिले, हम डिनर के लिए बाहर गए। इस मुलाकात के बाद दोनों के बीच नजदीकियां बढ़ी और फिर प्यार हुआ। अब ये कपल शादी करने जा रहा है। बता दें, एडेल की पहली शादी साइमन कोनेकी से हुई थी। दोनों का साल 2019 में दोनों का तलाक हो गया। इस एक्स कपल का 11 साल का एक बेटा भी है, जिसका नाम एंजेलो है।

इब्राहिम संग बेटी पलक तिवारी के डेटिंग पर श्वेता तिवारी ने दिया रिएक्शन, कहा- 'कब तक बर्दाश्त करेगी'

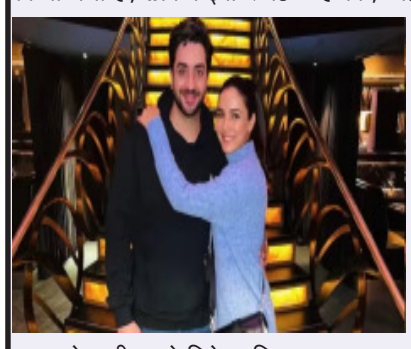

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिली। श्वेता तिवारी की बेटी पलक तिवारी अपनी प्रोफेशनल लाइफ से ज्यादा पर्सनल लाइफ को लेकर सुर्खियों में रहती हैं। एक्ट्रेस का नाम काफी वक्त से सारा अली खान के भाई इब्राहिम अली खान से जुड़ रहा है।दोनों को कई बार एक साथ स्पॉट भी किया गया है, लेकिन इस रुमर्ड कपल ने कभी अपने रिलेशनशिप की पुष्टि नहीं की है, लेकिन एक्ट्रेस की मां श्वेता तिवारी ने बेटी के रिलेशनशिप पर चुप्पी तोड़ी है। जो काफी वायरल हो रहा है। पलक तिवारी ने साल 2023 में सलमान खान की मूवी किसी का भाई किसी की जान से अपना डेब्यू किया था। फिल्म भले ही न पर्दे पर अच्छी कमाई न की हो लेकिन पलक ने अपनी एक्टिंग से लोगों का दिल जीता। एक्टिंग के साथ साथ पलक का नाम काफी वक्त से सारा अली खान के भाई इब्राहिम अली खान से जुड़ रहा है। टाइम्स ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के मुताबिक, श्वेता ने अपनी बेटी के कथित रोमांस की अफवाहों पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा है- 'पलक अभी मजबूत हैं, लेकिन कल कुछ टिप्पणी या लेख उनके आत्मविश्वास को ठेस पहुंचा सकते हैं।' आगे उन्होंने ये भी कहा है कि, 'वह अभी भी बच्ची हैं। कभी-कभी चीजें इतनी क्रूर हो जाती हैं, जैसे उनका हर दूसरे लड़के के साथ अफेयर हो। मुझे भी नहीं पता कि वह ये सब कब तक बर्दाश्त करेंगी।ॉ श्वेता ने पलक के पतले शरीर के बारे में नकारात्मकता को भी संबोधित किया और कहा, यह उसे परेशान भी नहीं करता है। शुरू में उसे यह महसूस होता था, लेकिन अब वह जानती है कि ऐसे बहुत से लोग हैं जो उसके जैसे दिखते हैं और उसके जैसा दिखना चाहते हैं। वह जानती है कि उसने बहुत मेहनत से यह मुकाम हासिल किया है।बता दें, पलक तिवारी ने बीते साल 2023 में सलमान खान की फिल्म 'किसी का भाई किसी की जान' से डेब्यू किया है। कहा जा रहा है कि वह जल्द 'द वर्जिन ट्री' में नर आएंगी।

प्रियंका चोपड़ा की डिट्टो कॉपी हैं ढाई साल की मालती कार में लाडली की हरकत को 'देसी' गर्ल ने किया कैप्चर

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिली। प्रियंका चोपड़ा पर्सनल और प्रोफेशनल लाइफ को बैलेंस करना अच्छे से जानती हैं। काम के बीच वह अपने पति निक जोनस और बेटी मालती मैरी के साथ क्वालिटी टाइम बिताना नहीं भूलती हैं। खास बात ये है कि वह अपनी जिंदगी से जुड़े खूबसूरत पलों को फैंस के साथ भी शेयर करती हैं।हाल ही में, प्रियंका चोपड़ा ने अपनी आगामी फिल्म द ब्लफ की शूटिंग पूरी की और अपने घर लौट गईं। इस बीच उन्होंने सोशल मीडिया पर अपनी लाडली की एक फोटो शेयर की है, जिसे देख आप भी कहेंगे कि वह पक्का उनकी कॉपी हैं।दरअसल, प्रियंका चोपड़ा ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर खुद एक सनकिस्ड फोटो शेयर की। तस्वीर में वह कार में बैठकर धूप का मजा लेती दिखीं। अपनी तस्वीर के बाद उन्होंने ढाई साल की मालती की भी एक पिक्चर शेयर की। इस तस्वीर में प्रियंका की तरह उनकी लाडली भी धूप का मजा ले रही हैं। कार में बैठकर आसमान की ओर देखकर मालती धूप सेकती हुई क्यूट लग रहीं। प्रियंका ने फोटो के साथ कैप्शन में लिखा, वह कैलिफोनिया का सूरज है।प्रियंका चोपड़ा पिछले काफी समय से अपनी आगामी फिल्म द ब्लफ की शूटिंग के लिए ऑस्ट्रेलिया में थीं। अब उन्होंने शूटिंग पूरी कर ली है। एक्ट्रेस ने बीते दिन द ब्लफ की शूटिंग से यादगार पलों को इंस्टाग्राम पर शेयर किया था। सेट पर पति और बेटी के साथ मस्ती करने से लेकर को-स्टार्स के साथ खूबसूरत पल बिताने तक, फोटोज और वीडियोज में देखा जा सकता है कि प्रियंका ने काम के साथ-साथ कुछ यादगार लम्हों को भी जीया है। फ्रैंक ई फ्लॉवर्स निर्देशित द ब्लफ के अलावा प्रियंका चोपड़ा हॉलीवुड फिल्म हेड्स ऑफ स्टेट में जॉन सीना के साथ नजर आएंगी। ऐसी चर्चा है कि वह सालों बाद बॉलीवुड में फरहान अख्तर की फिल्म जी ले जरा से वापसी करेंगी। फिलहाल, अभी तक इसकी कोई अनाउंसमेंट नहीं हुई है।

पहली बार अभिषेक बच्चन ने ऐश्वर्या राय संग तलाक की खबरों पर किया रिएक्ट बोले- बात को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिली। बॉलीवुड का फेमस कपल अभिषेक बच्चन और ऐश्वर्या राय बच्चन काफी समय से सुखिर्यों में है। इस कपल को लेकर सोशल मीडिया पर अफवाह उड़ रही है की दोनों की पर्सनल लाइफ में चीजें ठीक नहीं चल रही है, जिसके चलते इस कपल ने तलाक लेने का फैसला किया है। रह-रहकर गॉसिप टाउन में कपल में तलाक को लेकर रूमर्स उड़ रही हैं। इतना ही नहीं हद तो तब हो गई जब सोशल मीडिया पर अभिषेक बच्चन डीपफेक वीडियो वायरल हुआ, जिसमें वो अपनी पतनी यानी ऐश्वर्या राय से तलाक लेने की बात कर रहे हैं।अभिषेक बच्चन इन दिनों पेरिस में है जहां उन्होंने पेरिस ओलंपिक 2024 का भरपूर मजा लिया। सोशल मीडिया पर अभिनेता ने अपनी कुछ फोटोज भी शेयर की। इसी बीच उनका एक वीडियो भी वायरल हो रहा है जिसमें उन्होंने ऐश्वर्या राय बच्चन संग तलाक के बारे में बात की। हालांकि ये वीडियो डीपफेक बताया जा रहा है । इन खबरों के बीच अब अभिषेक का तलाक की अफवाहों को बंद करने का एक और वीडियो इंटरनेट पर सामने आया है, जिसमें उन्होंने अपनी सगाई की अंगूठी दिखाई।' तलाक की खबरों पर क्या बोले अभिषेक बॉलीवुड यूके मीडिया को दिए एक इंटरव्यू में अभिषेक ने ऐश्वर्या राय बच्चन संग तलाक की अफवाहों पर बात की और उन्होंने कहा, ''मुझे इस बारे में आपसे कुछ भी नहीं कहना है। दुख की बात है कि आप सभी ने पूरी बात को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया है। मैं समझता हूं, आप ऐसा क्यों करते हैं।आपको कुछ कहानियां दर्ज करनी होंगी। अभी भी शादीशुदा हूं, क्षमा करें। इस दौरान उन्होंने अपनी अंगूठी भी दिखाई। ये वीडियो रविवार को सुबह सोशल मीडिया पर काफी वायरल भी हो रहा था, लेकिन अब इसे इंस्टाग्राम से डिलीट कर दिया गया है। हालांकि, यह स्पष्ट नहीं है कि ऑनलाइन सामने आया वीडियो नया है या पुराना। यह पहली बार है जब अभिषेक ने अपने अलगाव की अफवाहों पर बात की है। बता दें, 12 जुलाई को जियो वर्ल्ड कन्वेंशन सेंटर में अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट की शादी में दोनों को अलग-अलग पहुंचते देखा था। तब से सोशल मीडिया पर दोनों के तलाक की अफवाहें उड़ने लगी थी। शादी में अभिषेक ने अमिताभ बच्चन, जया बच्चन, श्वेता बच्चन, नव्या नवेली नंदा और अगस्त्य नंदा के साथ ग्रैंड एंट्री की। वहीं, ऐश्वर्या ने अपनी बेटी आराध्या बच्चन के साथ शामिल हुई थी।

सीजन का अल्टीमेट विनर सभी कंटेस्टेंट का एक साथ बन बैठा था दुश्मन

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिली। एमटीवी का डेटिंग रियलिटी शो स्प्लिट्सविला एक्स अब अपने फाइनल पड़ाव पर पहुंच चुका है। सनी लियोनी और इस सीजन में 33 कंटेस्टेंट आए थे, जिसमें से फाइनल तक तीन जोड़ियों के रूप में छह लोग ही अपनी जगह बना सके। बीते डोम सेशन में लक्ष्य और शुभी दोनों को मिश्चिव मेकर उर्फी जावेद के गेम 'कातिल कौन' के बाद फिनाले के नजदीक पहुंचकर शो से बाहर जाना पड़ा। आज शो का ग्रैंड फिनाले होने वाला है, जिसमें सनी लियोनी को इस सीजन का अल्टीमेट विनर मिल जाएगा।एमटीवी का डेटिंग रियलिटी शो स्प्लिट्सविला-15 काफी चर्चा में रहा। बीते दिनों ही ऑडियंस के सामने ही सिवित अपने को-कंटेस्टेंट दिग्विजय राठी के साथ धक्का-मुक्की करते दिखाई दिए थे। आज इस शो का ग्रैंड फिनाले हो रहा है। सनी लियोनी विनर की घोषणा करें उससे पहले ही सोशल मीडिया पर विजेता का नाम लीक हो चुका है। ट्रॉफी के साथ जोड़ी को 10 लाख रुपए भी मिले। मेकर्स विनर की घोषणा करें, उससे पहले ही किसके हाथ में इस सीजन की ट्रॉफी गई है, उस कंटेस्टेंट का नाम लीक हो चुका है। सभी को पीछे छोड़ते हुए जिन तीन जोड़ियों ने ग्रैंड फिनाले में अपनी जगह बनाई थी, उसमें आकृति नेगी-जसवंत बोपनाह, कशिश-दिग्विजय राठी और हर्ष-रूशाली का नाम शामिल है। अब विकिपीडिया ने शो का विनर घोषित होने से पहले ही उनके नाम का खुलासा कर दिया है।उनके दावे के मुताबिक, स्प्लिट्सविला सीजन 15 के अल्टीमेट विनर कोई और नहीं, बल्कि आकृति नेगी और जसवंत बोपनाह बने हैं, जिनके हाथों में सनी लियोनी और तनुज वीरवानी ने इस सीजन की ट्रॉफी थमाई है और साथ ही इनाम राशि के तौर पर उन्हें 10 लाख रुपए भी दिए हैं। हालांकि, अभी ग्रैंड फिनाले चल रहा है और अगर आप भी इस डेटिंग रियलिटी शो को देखना पसंद करते हैं, तो जियो सिनेमा पर इसे देख सकते हैं।आकृति नेगी और जसवंत बोपनाह के गेम की बात करें, तो शुरुआत में तो उन्होंने सिवित और अनिका के साथ मिलकर गेम खेला है, लेकिन बाद में जैसे-जैसे वह आगे बढ़ते गए, तो सभी उनके खिलाफ हो गए। यहां तक कि सभी उनके खिलाफ हो गए।जसवंत और आकृति को आधे सीजन में कभी मिश्चिव बॉक्स ने बचाया, तो कभी टास्क में 100 परसेंट परफॉर्म करके वह सेफ साइड पर बैठे। जसवंत और आकृति टिकट टू फिनाले जीतकर पहले फाइनलिस्ट बने थे।

शाह रुख खान ने ठुकरा दी थी देवदास नहीं बनना चाहते थे शराबी, ऐसे संजय लीला भंसाली ने किया था राजी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिली। साल 2002 की म्यूजिकल रोमांटिक ड्रामा देवदास सुपरहिट होने के साथ-साथ क्लासिक कल्ट मूवीज में भी गिनी जाती है। देवदास बने शाह रुख खान ने अपने दमदार किरदार से दर्शकों का दिल चुरा लिया था, लेकिन क्या आप जानते हैं कि शाह रुख का औरा बढ़ाने वाली इस फिल्म को उन्होंने पहले मना कर दिया था। जी हां, शाह रुख खान ने खुद खुलासा किया है कि उन्होंने पहले देवदास करने से इनकार कर दिया था। हाल ही में, शाह रुख स्विट्जरलैंड के लोकानी फिल्म फेस्टिवल में पाडी अल्ला कैरिएरा अवॉर्ड से सम्मानित हुए। इस फिल्म फेस्टिवल में शाह रुख ने अपनी सुपरहिट फिल्म को पहले मना करने की वजह बताई है। को लोकानी फिल्म फेस्टिवल में पाडी अल्ला कैरिएरा लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित किया गया है। फिल्म फेस्टिवल में शाह रुख ने न केवल सुजॉय घोष की फिल्म किंग की अनाउंसमेंट की बल्कि अपनी सुपरहिट फिल्म देवदास को लेकर दिलचस्प किस्सा बताया है। उन्होंने कहा कि वह पहले ये फिल्म ठुकरा चुके थे। जानिए इसकी वजह। शाह रुख खान ने बताया कि वह पहले देवदास नहीं करना चाहते थे, क्योंकि इसकी सबसे बड़ी वजह उनका कैरेक्टर था। रोमांटिक फिल्में करने वाले शाह रुख को पहली बार शराबी की भूमिका निभानी थी, जो अपनी प्रेमिका को कमिटमेंट भी नहीं देता। अभिनेता ने देवदास के बारे में कहा- जब शाह रुख खान ने देवदास को ठुकराया, तब संजय लीला भंसाली ने उन्हें साफ कह दिया था कि अगर वह हां नहीं करेंगे तो वह यह फिल्म नहीं बनाएंगे। उन्होंने बताया कि भंसाली सिर्फ उन्हें इस किरदार के लिए क्यों कास्ट करना चाहते थे। बकौल अभिनेता- मैंने मना कर दिया। वह (देवदास में उनका कैरेक्टर) एक असफल व्यक्ति है, एक शराबी है। मैं देवदास बनने के लिए बहुत कूल हूं। इसलिए यह एक तरह से खत्म हो गया और फिर जाने से पहले उन्होंने (संजय लीला भंसाली) बस एक बात कही, जो आज भी मेरे दिमाग में है। उन्होंने कहा, 'मैं तुम्हारे बिना यह फिल्म नहीं बनाऊंगा, क्योंकि तुम्हारी आंखें देवदास जैसी हैं।' तो मैंने कहा, ठीक है। उन्होंने कहा, 'मैं किसी को भी कास्ट नहीं करूंगा।' और एक साल तक उन्होंने ऐसा नहीं किया।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डा0 दीपक अरोरा द्वारा रामा प्रिन्टर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र.) 211002 से मुद्रित एवं सी-41 यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज। (उ.प्र.) 211010 से प्रकाशित।
सम्पादक/प्रकाशक
डा0 पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।